।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३११९
सृष्टि सं.- १९७२९४९११९

वर्ष-17 अंक-14 कार्तिक कृ. ८ से कार्तिक शु. ७ सं. २०७५ वि. 1 से 15 नवम्बर 2018 अमरोहा, उ.प्र. पृ. 12 प्रति-5/-

राम जैसी महान विभूतियों को उत्पन्न करें माताएं : वैदिक

विनोद कुमार शर्मा
ग्रेटर नोएडा।

प्रत्येक माता की इच्छा होती है कि उसका पुत्र संसार में यशस्वी बने, दुराचारी और व्यभिचारी न बने। इसके लिए माताओं को स्वयं अपने जीवन को सुन्दर और तपस्वी बनाना है। माता को वसुन्धरा कहा गया है, जिसके हम वशीभूत रहते हैं। ऋषि-मुनि हों, राजा हो, या दुष्ट दुराचारी, सब माता के गर्भ से ही उत्पन्न होते हैं। जब माता के हृदय में एकनिष्ठा उत्पन्न हो जाती है, पवित्रवाद होता है, तो वही विचारधारा उसके गर्भ में संतान की बन जाती है। माता जो शिक्षा गर्भकाल में संतान को दे देती है, वह किसी विश्वविद्यालय में नहीं मिल सकती। गर्भ की महान आत्मा भी माताओं को प्रेरणा देती रहती है। मां को भी सुन्दर उपदेश गर्भस्थ आत्मा से प्राप्त होता रहता है। यह माताओं से जानकारी प्राप्त करने से होता है। ये विचार सुमन कुमार वैदिक ने ग्रेटर नोएडा में कार्तिक पूर्णिमा एवं संक्रान्ति के अवसर पर 23 नवम्बर को आयोजित यज्ञ में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किये।

श्री वैदिक ने कहा कि अष्टावक्र जब गर्भ में थे, तब माता को उनके पिता ब्रह्म का उपदेश देते थे। एक समय वह अष्टावक्र की माता को उपदेश देते हुए कहने लगे कि यह मानव का अन्तःकरण देह त्याग के पश्चात् अन्तरिक्ष में लय हो जाता है। उस समय माता के गर्भ से जो आत्मा प्लवित हो रहा था, उसने माता को प्रेरणा दी। उससे प्रेरित होकर माता ने कहा- हे पतिदेव! आपका यह वाक्य अशुद्ध है, क्योंकि मेरी आन्तरिक भावना ऐसी प्रेरणा दे रही है।

बहुत सी माताएं, जिनके गर्भस्थल में दैत्य प्रकृति का पुत्र होता है, उसकी भावना से माता का आहार-विचार भी अशुद्ध हो जाता है। जब माताओं के गर्भ में ब्रह्मवेत्ता, ऊंची प्रवृत्ति के बालक होते हैं, तब माता की इच्छाएं, भावनाएं, भोजन की इच्छा बालक के अनुकूल हो जाती है।

यह गर्भवती माता के लिए अनुसंधान का विषय है। आज गर्भवती माताओं को उस पवित्र वैदिक परम्परा की पवित्र विद्या को अपनाने का प्रयास करना चाहिए, जिससे माताओं के अन्तःकरण की प्रेरणा पाकर ऊंची संतानों का जन्म हो, कीड़ों-मकोड़ों के समान जीवन जीने वाले पुत्रों का नहीं। यह स्वत: नहीं होता। इसके लिए माता को बहुत प्रयत्न करना होता है। गृहस्थ आश्रम में आने का उन्हीं माताओं को अधिकार होता है, जो बुद्धिमान हों। माताएं ही नहीं, पुरुष भी जो बुद्धिमान होते हैं, वही गृहस्थ आश्रम में जाने के अधिकारी हैं। क्योंकि गर्भस्थ शिशु पर नक्षत्रों और प्रत्येक रात्रि में चन्द्रमा की कलाओं का भी प्रभाव होता है। इस प्रकार की विद्या जानकर सन्तान उत्पन्न करना कन्या यज्ञ या पुत्रेष्टि यज्ञ कहा जाता है। समाज विचारों और तप से ऊंचा बनता है। वैदिक काल में माताएं अध्ययनशील रहती थीं। दर्शनों का अध्ययन करने से वे कामवासनाओं से दूर रहती हुई, ब्रह्मचर्य पर बल देती हुई, विचार के साथ अपने कर्तव्य का भी पालन करती थीं। श्रेष्ठ, ओजस्वी, बलिष्ठ सन्तान को जन्म देना उनका कर्तव्य और लक्ष्य रहता था, जिससे समाज और राष्ट्र ऊंचा बनता था। आज यह विद्या और संकल्प न होने से क्रोधी, लोभी, दुराचारी, अहंकारी और मोह में फंसने वाली सन्तानें जन्म ले रही हैं, जिससे यह समाज और राष्ट्र के मानव, अमानव हो गये हैं। जब मानव सत्य की ओर आने लगता है, तो समाज ऊंचा बनने लगता है।

ग्रेटर नोएडा में पवित्र यज्ञ वेदियों पर आहुतियां देते श्रद्धालु यजमान- केसरी

आज राम का मंदिर बनाने का नहीं, राम जैसी आत्माओं को जन्म देने वाली माताओं की आवश्यकता है, जो मर्यादा को स्थापित और अपने कर्तव्य का पालन करने वाली हो। यह संसार स्वत: ऊंचा नहीं बनता। जब समाज में महान व्यक्ति होते हैं, महान राजा होते हैं, तभी संसार ऊंचा बनता है। भगवान राम का निर्माण गर्भ में माता कौशल्या ने किया था। गर्भकाल में उन्होंने राष्ट्र के अन्न का त्याग कर दिया था, जो तामसिक और राजसिक प्रवृत्ति लाता है। वह स्वयं श्रम से अन्न, वनस्पतियां उगातीं तथा केवल उन्हीं का आहार करते हुए वेद का स्वाध्याय व यज्ञ करतीं। राम के जन्म के पश्चात् उन्हें दूध पिलाते, भोजन कराते ब्रह्मज्ञान दिया करती थीं। ऋषि लोमश की माता ने अपने पति से इच्छा प्रकट करते हुए कहा था कि मेरी इच्छा तो ऐसी है कि मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बालक संसार में तपस्वी होना चाहिए। बालक जब तपस्वी होता है, तो माता को धन्यवाद प्राप्त होता है। समाज उसकी माता को आदर की दृष्टि से देखता है। उनकी माता ने अपने पति से कहा कि इस प्रकार की विचारधारा का पुत्र मैं चाहती हूं। लोमश जी के पिता भुंजक ऋषि ने कहा कि मैं भी यही चाहता हूं, क्योंकि हमारा ब्रह्मगृह है। ब्रह्म को जानने की परम्परा हमारे यहां रही है।

जब लोमश मुनि ने कहा कि माता क्या आज्ञा है, तो माता ने आज्ञा दी कि पुत्र! तुम तपस्वी बनो, महान बनो, अपनी आत्मा का शोधन करो। मेरा तुम्हें उत्पन्न करने का एक ही अभिप्राय है कि तुम जीवन में कलंकित न हो जाना। जब यह निर्देश माता की पवित्र भावना में होता है, तो वह भावना बालक के हृदय में ओतप्रोत हो जाती है। बालक का अन्तःकरण माता के विचारों से इतना पवित्र हो जाता है कि वह माता की आज्ञा का पालन करने लगता है। ऐसी ही शिक्षा माता मदालसा ने और कुंती जैसी अनेक माताओं ने दी। आज भगवान राम, कृष्ण, हनुमान की पूजा का अर्थ है उन जैसी सन्तान को माताएं पैदा करें।

इस अवसर पर आचार्य दार्शनेय लोकेश ने यज्ञ एवं संकल्प पाठ कराकर सौर माहों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज से तपस्य माह प्रारम्भ हो गया है। अगली संक्रान्ति 22 दिसम्बर को मकर संक्रान्ति के रूप में मनायी जाएगी। उसी दिन से उत्तरायण प्रारम्भ होगा।

नियमित स्तम्भ

- ऐसे होते हैं आर्य
- महान विभूतियां
- हमारे गुरुकुल
- ऐतिहासिक धरोहर
- भारतवर्षीय गौशालाएं
- योग भगाए रोग
- काव्य जगत
- साहित्य समीक्षा
- लोकोपयोगी न्यास
- आर्यजगत के प्रकाशन
- खान-पान और स्वास्थ्य
- आर्यसमाज एक परिदृश्य
- जन्म दिवस की शुभकामनाएं
- पुण्यतिथि- शतशः नमन्

अखिल भारतीय चरण सिंह सुमन विचार मंच द्वारा किया गया अनेक प्रतिभाओं का सम्मान

डॉ. सूर्यकान्त सुमन
धामपुर (बिजनौर) उ.प्र.

अखिल भारतीय चरणसिंह सुमन विचार मंच के सौजन्य से कुंवर महाविद्यालय जटपुरा महावतपुर के विशाल प्रांगण में स्वाधीनता संग्राम सेनानी चरणसिंह सुमन के स्मृति दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष सूर्यकान्त सुमन ने राजू गुप्ता (अध्यक्ष-नगरपालिका धामपुर), डॉ0 एम0पी0 सिंह मण्डल प्रभारी युवा वाहिनी, जिलाध्यक्ष सर्वोदय मण्डल रामपाल सिंह, शिवकुमार सिंह (आजादी की दूसरी लड़ाई के सम्पादक, चन्द्रकिशोर जी प्रधानाचार्य, डॉ0 बाबू सिंह निराला, अहमतुल्ला समाजवादी विचारक डॉ0 शान्ति शर्मा, संध्या सिंह, आदि विभिन्न क्षेत्रों की उदीयमान प्रतिभाओं को प्रशस्ति पत्र एवं उत्तरीय अलंकरण वस्त्र से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुंवर भारत सिंह आर्य ने की। राजू गुप्ता ने कहा कि श्री सुमन एक स्वाधीनता सैनानी ही नहीं, वरन धामपुर की शान थे। उन्होंने गरीब जनता के लिए संघर्ष किया। डॉ0 एन0पी0 सिह ने सुमन जी को गरीबों का मसीहा बताया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम के संचालक कमल दुआ महाराज ने बताया कि अखिल भारतीय चरणसिंह सुमन मंच के लिए 11000/- रुपये धनराशि दिल्ली प्रभारी कर्नल सुभाष कुमार ने प्रदान की तथा 25000/- की धनराशि सूर्यकान्त सुमन ने मंच को दी। इसके अतिरिक्त डॉ0 सूर्यमणि रघुवंशी श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए चन्द्रवीर सिंह गहलौत वरिष्ठ अधिवक्ता लोकतंत्र रक्षक सेनानी, श्रीमती डॉ0 कमलेश सिंह राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्राचार्य डॉ0 लालबहादुर सिंह रावल, पूर्व सांसद को सम्मानित करने की घोषणा की गयी।

दिनेश नवीन सम्पादक रक्तवीर ने कहा कि सुमन जी धामपुर के गौरव थे। उन्होंने अपने जीवन में भ्रष्टाचारमुक्त समाज के लिए भगतसिंह चौक पर अन्ना हजारे के आन्दोलन को भी गति दी।

धारा 377 व 497 पर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

सनातन संस्कृति के रक्षण हेतु आर्यसमाज ने दिया धरना

आनन्द प्रकाश आर्य
हापुड़ (उ0प्र0।

आर्य समाज हापुड़ के प्रधान आनन्द प्रकाश आर्य के नेतृत्व में आर्य महिला एवं पुरुषों ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा धारा 377 व 497 को समाप्त कर भारतीय सनातन संस्कृति को समाप्त करने के लिए दिये गये निर्णय के विरोध में एक ज्ञापन माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार के नाम उपजिलाधिकारी, हापुड़ को दिया।

प्रधान आनन्द प्रकाश आर्य ने बताया कि समलैंगिकता को वैध ठहराया जाना तथा पुरुष-महिला द्विपक्षीय सहमति से होने वाले काम सम्बन्ध की छूट देकर सर्वोच्च न्यायालय ने अपने दोनों फैसलों से भारत की सनातन संस्कृति पर कुठाराघात किया है। आर्य समाज इसका पुरजोर विरोध करता है।

अत: आर्य समाज की भारत सरकार से विनम्र मांग है कि जनहित में सर्वोच्च न्यायालय के इन समाजविरोधी और अमानवीय फैसलों के विरुद्ध संसद से कानून स्वीकृत कराकर विश्व में सर्वोच्च भारतीय सनातन संस्कृति की रक्षा कर कृतार्थ करें।

महिला प्रधान माया आर्य, मंत्राणि अलका अग्रवाल ने भी अपने विचार रखकर महिला समाज का रोष व्यक्त किया। धरने में आनन्द प्रकाश आर्य, सुरेन्द्र गुप्ता कबाड़ी, मंगलसेन, वीना आर्या, पुष्पा आर्य, अलका अग्रवाल, प्रतिभा भूषण, शकुन्तला आर्य, बीना आर्य, माया आर्य, सुरेश सिंहल, राधारमण आर्य, सुन्दरलाल आर्य (जिला मंत्री), विजय शर्मा, अनिल कसेरे, शिव कुमार, सुरेन्द्रनाथ आदि सम्मिलित रहे।

धारा ३७७ व ४९७ को सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा समाप्त करने के संबन्ध में ज्ञापन

प्रतिष्ठा में,
माननीय प्रधानमंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली।

आदरणीय महोदय,

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने समलैंगिकता को वैध ठहराते हुए अपना निर्णय दिया है। जिसका हम सभ्य समाज के नागरिक विरोध करते हैं।

सभी धर्मनिष्ठ, सभ्य समाज का मानना है कि-

1. समलैंगिकता मानसिक बीमारी है।
2. समलैंगिकता से समाज दूषित होता है।
3. समलैंगिकता नैतिकता के विरुद्ध है।
4. समलैंगिकता ईश्वरीय विधान के विरुद्ध है।
5. सभ्य समाज के लिए कलंक है।
6. समलैंगिकता से भयंकर रोग पैदा होते हैं।

महोदय,

सर्वोच्च न्यायालय ने द्विपक्षीय सहमति से होने वाले काम-संबन्ध की छूट दे दी है। इसे कानून और नीति शास्त्रों में अभी तक व्यभिचार कहा जाता रहा है। न्यायालय ने सहमति शब्द का प्रयोग किया है। विवाह भी तो अपने आप में सतत और शाश्वत सहमति ही है। यदि पति-पत्नी इस रजामंदी को जब चाहें, तब भंग करके किसी के साथ भी सहवास करें, तो परिवार का क्या औचित्य रह जाएगा। समाज में पवित्रता के स्थान पर अनैतिकता का वर्चस्व बढ़ जाएगा। पति-पत्नी परिवार की प्रथम इकाई हैं, परिवार से ही समाज, समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। सर्वोच्च न्यायालय के उपरोक्त दोनों फैसले हमारी सनातन संस्कृति पर कुठाराघात है।

अत: आर्य समाज की विनम्र मांग है कि जनहित में सर्वोच्च न्यायल के इस समाज विरोधी और अमानवीय फैसले के विरुद्ध संसद से कानून स्वीकृत कराकर विश्व में सर्वोच्च भारतीय सनातन संस्कृति की रक्षा कर कृतार्थ करें।

-निवेदक
आर्य समाज एवं नगर के नागरिकगण, हापुड़

दान्दूपुर ग्राम, जहां यज्ञ की अग्नि कभी शान्त नहीं होती

सुमनकुमार वैदिक
मवाना (मेरठ)।

ऐतिहासिक जनपद मेरठ का गौरवशाली इतिहास रहा है। 1857 की क्रान्ति का सूत्रधार यह जनपद अब मेरठ, गाजियाबाद और बागपत के रूप में जाना जाता है। गाजियाबाद के ग्राम खुर्रमपुर सलीमाबाद में अत्यंत निर्धन परिवार में जन्मे ऐसे बालक, जिसने कभी किसी स्कूल में शिक्षा नहीं ली, जिन्हें ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के नाम से जाना जाना गया। इनके द्वारा बागपत के ग्राम बरनावा में महाभारतकालीन ऐतिहासिक लाक्षागृह को विधर्मियों से मुक्त करा गुरुकुल की स्थापना कर वेद और यज्ञ की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के एक सौ वर्ष बाद जो क्रान्ति प्रारम्भ की, उससे साठ वर्ष के पश्चात् नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में यज्ञ की सुगन्ध और उसके धुएं से वायुमण्डल को शुद्ध करने में आचार्य गुरुवचन शास्त्री, आचार्य अरविन्द शास्त्री के नेतृत्व में अनेक गुरुकुल के स्नातक लगे हुए हैं।

महाभारतकाल की राजधानी हस्तिनापुर मेरठ जनपद का भाग है, जिसके निगट ग्राम दान्दूपुर में ग्रामवासियों ने मिलकर यज्ञ की दुन्दुभी बजा रखी है। अपने घरों में ग्रामवासी निरन्तर यज्ञ वेद पारायण यज्ञ कराते रहते हैं। वहीं सभी ग्रामवासी चतुर्वेद पारायण यज्ञ पांच वेदियों पर एक साथ करते हैं। राजनीतिक रूप से तीन विचारधारा में बंटे ग्रामवासी यज्ञ के लिए सभी मतभेद भुलाकर उसे पर्व के रूप में मिलकर करते हैं। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के शरीर पूरा होने के 26 वर्ष बाद भी उनके प्रति सभी को अत्यंत श्रद्धा है।

मास्टर हेमसिंह, बताते हैं कि उनके कोई सन्तान नहीं थी। 1962 में उन्होंने ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी को प्रथम बार बुलाकर यज्ञ कराया। इससे ग्रामीणों की यज्ञ के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। 1965 में सामूहिक यज्ञ कराया गया। उस समय यातायात और सूचना के साधन भी नहीं थे। दान्दूपुर से 6 किलोमीटर दूर बड़गांव था, जहां तक बस आती थी। उस यज्ञ के लिए 50 किलो सामग्री स्वयं सिर पर रखकर ब्रह्मचारी जी लाये। उनकी सरलता से प्रभावित हो, 1966 में कर्मसिंह ने यज्ञ कराया। 1967 में अजीत सिंह ने यज्ञ कराया। उसके पश्चात् तो यहां यज्ञ की अग्नि कभी शांत नहीं हुई।

ब्रह्मचारी जी के शरीर शांत होने के पश्चात् 1994 में प्रथम बार सभी ग्रामीणों ने मिलकर चतुर्वेद पारायण यज्ञ श्रृंखला प्रारम्भ की। प्रत्येक दो वर्ष में एक बार यज्ञ कराते हैं। इस वर्ष आठवां चतुर्वेद पारायण यज्ञ 18 से 24 अक्टूबर तक आचार्य गुरुवचन शास्त्री के ब्रह्मत्व में कराया गया, जिसमें स्वामी कर्मवीर भी उपस्थित रहे। यज्ञ की तैयारी छ: माह पूर्व से की जाती है। इस ग्राम के युवक-युवतियां फौज, पुलिस में अधिक हैं। उनकी भी श्रद्धा इस यज्ञ से जुड़ी रहती है।

फौजी संजय बाल्मीकि प्रत्येक यज्ञ में 15 किलो घी देते हैं। अन्य भी इसी प्रकार कुछ न कुछ सहयोग करते हैं। जिनकी स्थिति इस समय देने की नहीं होती, वे वचन दे देते हैं कि मेरा इतना सहयोग है, जो आगामी वर्ष में दूंगा। अथर्ववेद की वेदी के यजमान यशपाल, ऋग्वेद के कर्मा एवं संजीव कुमार, यजुर्वेद के कपिल और सामवेद के टीटू रहे। हजारों की संख्या में श्रद्धालु ग्रामवासियों ने आहुतियां प्रदान कीं।

सम-सामयिक आर्ष साहित्य के प्रकाशक
आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।

हमारा पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.), मो० : 09412139333

स्वनामधन्य- आर्यरत्न, तपोनिष्ठ

महाशय सत्यप्रकाश जी आर्य

जन्मशती वर्ष : 25 दिसम्बर 2017-18

स्मारिका का भव्य प्रकाशन

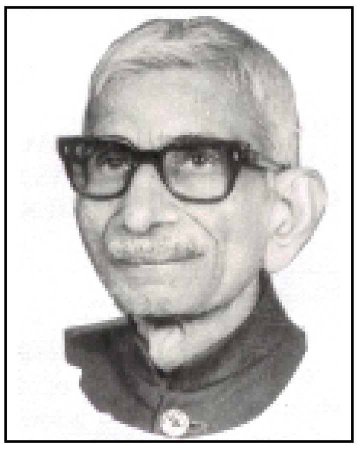

स्वनामधन्य उदारमना, आर्यरत्न, प्रखर समाजसेवी **महाशय सत्यप्रकाश जी आर्य** आजीवन आर्यसमाज, गुरुकुल तथा वैदिक संस्थाओं के प्रति समर्पित रहे। वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द के मिशन व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए उनका योगदान अतुलनीय रहा। वे आर्यसमाज के लिए सर्वस्व समर्पित करने के लिए सदैव उद्यत रहते थे। **उनको केवल एक ही चिन्ता थी कि आर्य समाज का प्रसार अधिक से अधिक कैसे हो।**

हम सभी के लिए यह गौरव की बात है कि **२५ दिसम्बर २०१७-१८** पूज्य महाशय जी का जन्मशती वर्ष है। इस पुनीत अवसर पर **आर्यावर्त प्रकाशन** द्वारा बड़े स्तर पर एक **भव्य एवं यादगार स्मारिका** का प्रकाशन किया जाएगा, ताकि वर्तमान तथा आगे आने वाली संततियाँ महाशय जी जैसे महामानवों के प्रति गर्व कर सकें। निश्चय ही ऐसी देवतुल्य विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से राष्ट्र व समाज को एक रचनात्मक दिशा मिलती है। विश्वास है कि यह स्मारिका इस दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी। बड़ी प्रसन्नता है कि महाशय जी के सुपुत्र प्रिय भ्राताश्री **विनय प्रकाश जी आर्य** एवं **पौत्र अभय आर्य** आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त प्रकाशन एवं आर्य समाज के मिशन के लिए निरन्तर सहयोग प्रदान करते रहते हैं। उनके सहयोग से जनहितकारी तथा आत्मकल्याणकारी उत्कृष्ट साहित्य का प्रकाशन भी किया जाता रहा है।

महाशय जी से जुड़े विद्वान लेखकों तथा आर्यसमाज एवं समाज के विभिन्न घटकों, संस्थानों से जुड़े विज्ञ महानुभावों से अनुरोध है कि वे अपनी सशक्त लेखनी से महाशय जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने लेख, संस्मरण तथा रचनाएं आदि यथाशीघ्र प्रकाशनार्थ भेजें। धन्यवाद,

-: निवेदक :-

हरिश्चन्द्र आर्य	**विनय प्रकाश आर्य- अंजु आर्या**	**डॉ. अशोक आर्य**
मार्गदर्शक	मुख्य समन्वयक	सम्पादक
उषा आर्या	**अभय आर्य- तूलिका आर्या**	**डॉ. बीना रुस्तगी**
मुख्य संयोजक	अतिथि सम्पादक	प्रबन्ध सम्पादक

मेधार्थी शर्मा की स्वर्ण जयन्ती पर हुआ सामवेद यज्ञ

मथुरा (उ०प्र०)। केशवकुंज कालोनी के निवासी मेधार्थी शर्मा ने अपनी 50 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन आनन्दपूर्वक आत्मसंतुष्टि के साथ किया।

यज्ञ के पुरोहित पद पर स्वामी सौम्यानन्द सरस्वती विराजे। उन्होंने वेदमंत्रों का सस्वर पाठ करके यज्ञ को सफल बनाया। स्वामी जी ने यज्ञावधि में वेदमंत्रों का सविस्तार अर्थ करके मानव कल्याणार्थ वेद की शिक्षाओं की उपयोगिताओं को मधुर वचनों द्वारा जनसमूह को समझाया।

यज्ञोपरांत स्वामी शांतानन्द जी ने यज्ञ की उपयोगिता, सामाजिक जीवन की व्यवहारिकता, वैदिक धर्म और आर्य समाज के उद्देश्यों पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

यह जानकारी मलखान सिंह, प्रधान आर्य समाज, कृष्णनगर, मथुरा ने दी।

संक्षिप्त समाचार

२४ से होगा वार्षिकोत्सव

बिजनौर। 24-25 नवम्बर को गुरुकुल नवलपुर (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव गुरुकुल प्रांगण में होगा।

दढ़ियाल का उत्सव २ से

दढ़ियान (हसनपुर) अमरोहा। आर्य समाज का वार्षिकोत्सव 2 से 4 नवम्बर 2018 तक होगा। (ज्ञानेन्द्र आर्य, प्रधान, मोबा. : 9412493724)

हरफरी में महासम्मेलन

बदायूँ। आर्य समाज का वार्षिक उत्सव हरफरी, बदायूं में 19 से 21 अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ, जिसमें डॉ0 महावीर मुमुक्षु ने यज्ञ के महत्व और उसके लाभ पर प्रकाश डाला।

सोनीपत में हुई प्रश्नोत्तरी परीक्षा

सोनीपत। आर्य समाज सैक्टर 14 में आर्यवीर दल सोनीपत द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम पर आधारित प्रश्नोत्तरी परीक्षा में 15 विद्यालयों के 194 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

मण्डलीय आर्य महा सम्मेलन १९ से

अमरोहा। ऐतिहासिक गंगा मेला तिगरीधाम में 19 से 23 नवम्बर तक भव्य मण्डलीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन होगा। यह जानकारी संयोजक हेतराम सागर ने देते हुए बताया कि इस अवसर पर अनेक संन्यासी विद्वान, राजनेता, समाजसेवी पधार रहे हैं। इस अवसर पर राष्ट्र कल्याण यज्ञ के साथ प्रवचन तथा भजनोपदेश होंगे।

आर्य महासम्मेलन ११ को

बरनाला (प्रेम भारद्वाज)। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि0), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन 11 नवम्बर 2018 को बरनाला में आयोजित किया जा रहा है। सभा ने अपील की है कि पंजाब की समस्त आर्यसमाजें इन तिथियों में अपने-अपने आर्य समाज का अन्य कोई भी कार्यक्रम न रखें और इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए पूरी शक्ति से जुट जाएं। सभा की विज्ञप्ति में कहा गया है कि इससे पूर्व 17 फरवरी 2017 को लुधियाना और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सफल आर्य महासम्मेलनों का आयोजन कर चुकी है।

यज्ञ का आयोजन

बिजनौर। अरुणोदय गीता नगरी में आर्य नेता आचार्य जयनारायण अरुण की पत्नी सुप्रसिद्ध समाजसेविका श्रीमती स्नेहलता अरुण की द्वितीय पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्नेहलता जी के यजमानिक व धार्मिक कमेटी की चर्चा करते हुए उनके समर्पण का भावभीना स्मरण किया गया।

आर्य नेता व समाजसेवी आचार्य जयनारायण के आवास पर आयोजित यज्ञ में माता जी के पुत्र कपिल अरुण, पुत्रवधू सुनीता अरुण, पौत्र डॉ. मनु आर्य, पौत्री सुरभि ने यज्ञ किया। साथ ही श्रेष्ठ समाजसेवी सम्मान के अन्तर्गत पांच श्रेष्ठ समाजसेवियों का सम्मान किया। इस अवसर पर डॉ. अशोक आर्य, डॉ. बीना आर्या, सूर्यमणि रघुवंशी आदि सहित अनेक लोगों ने सहभागिता की।

आध्यात्मिक चिन्तन एवं वेदानुशीलन पर आधारित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक

आयुष्मान् भव

(दीर्घ अर्थात् लम्बी आयु प्राप्त करो)

१२० पृष्ठ, रंगीन आवरण

: पुस्तक प्राप्ति स्थल :

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'
आर्यसमाज मन्दिर, बिहारीपुर
बरेली (उ0प्र0)– 243003
चल0 : 094123721179, 9759527485
मूल्य : 25 रुपये

आज ही मंगाएं यह संग्रहणीय पुस्तक

टंकारा चलो : आर्यावर्त केसरी के संयोजन में

टंकारा, अहमदाबाद, द्वारिकापुरीधाम, पोरबंदर तथा सोमनाथ आदि

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा कार्यक्रम-2019

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा– 26 फरवरी से 06 मार्च 2019 तक

प्रस्थान : 26 फरवरी 2019 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा। (25 फरवरी 2019 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

वापसी : 06 मार्च 2019 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

- **अहमदाबाद, आर्यवन-रोजड़**- साबरमती आश्रम, अक्षरधाम, वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुरुकुल आर्यवन आदि।
- **द्वारिकापुरीधाम**- चार धामों में से एक धाम द्वारिकाधीश मंदिर, गोमती गंगा, श्री कृष्ण महल, भेंटद्वारिका, रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब, आदि।
- **नागेश्वर महादेव**- द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक नागेश्वर महादेव।
- **पोरबन्दर**- महात्मा गांधी का जन्मस्थल, आर्ष कन्या गुरुकुल, सुदामा महल, नक्षत्रशाला, भारतमाता मंदिर आदि।
- **भालका तीर्थ**- वह ऐतिहासिक स्थली, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण को तीर लगा था।
- **सोमनाथ तीर्थ तथा दीव**- ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाइट एंड साउंड शो' का दिग्दर्शन।
- **ऋषि जन्मभूमि टंकारा**- महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्यसमाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी।

इस यात्रा निमित्त कुल धनराशि रु० 4500/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 4000/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 2000/- की धनराशि दिनांक- 10 दिसम्बर 2018 तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट/चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। इसी प्रकार जो महानुभाव AC III व AC II में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। वातानुकूलित श्रेणी के लिए उन्हें रु० 1500/- से रु० 2000/- तक अतिरिक्त धनराशि देनी होगी। इस श्रेणी में रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 3000/- की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। यह धनराशि आपके द्वारा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFSC Code SBIN0000610 में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनरशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें। समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयोग प्रार्थनीय है।

-: यात्रियों को आवश्यक निर्देश :-

● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, परिचय-पत्र (आईडी प्रूफ), दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, यह भी सूचित करें।

नोट :

१. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। २. यात्रा रेलगाड़ी तथा डीलक्स बसों द्वारा संपन्न होगी। ३. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। यदि कोई महानुभाव होटल में रुकना चाहते हों, तो इस सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क अलग से देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह व्यवस्था यथासंभव उपलब्धता पर निर्भर रहेगी। कोटिशः धन्यवाद;

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं...

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं संपादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कालोनी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ०प्र०)- 244221
(चलभाष : 09412139333, 8630822099)

❑ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), ❑ अभय आर्य (9927047364),
नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405),
❑ सुमन कुमार वैदिक- सह व्यवस्थापक (09456274350)

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

सत्यार्थप्रकाश के मर्म को समझने-समझाने का दायित्व विद्वानों का है। हमारा प्रयास सत्यार्थप्रकाश के विद्वान तैयार करना है, जो महर्षि दयानन्द के सधर्म रथ को आगे बढ़ा सकें। इसी उद्देश्य से आर्यावर्त केसरी पाक्षिक के सान्निध्य में श्री सुमन कुमार वैदिक के संयोजन में सत्यार्थप्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है।

परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, परिचय की छायाप्रति के साथ 150/- रुपये की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभागी को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छः माह की आर्यावर्त केसरी पाक्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 (IFSC कोड SBIN 0000610) में 200/- रुपये जमा कराने होंगे तथा रसीद की छायाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक- 01 अक्टूबर 2018 से प्रारम्भ हो चुके हैं। पंजीकरण आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास पर कराये जा सकते हैं।

प्रथम पुरस्कार- एक लाख रुपये तथा स्मृति चिह्न

द्वितीय पुरस्कार- पचास हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न

तृतीय पुरस्कार- पच्चीस हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न

अनेक नामित पुरस्कार- इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिये जाएंगे।

पच्चीस पुरस्कार- एक-एक हजार रुपये।

-: कैसे बनेंगे विजेता :-

(1) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना होगा।

(2) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।

(3) आर्यावर्त केसरी के 25 सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण निःशुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।

(4) पत्र-व्यवहार में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का आयोजन दिनांक- 07 जुलाई 2019 को इन प्रस्तावित केन्द्रों- दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बेंगलूरु, कलकत्ता, चेन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजड़, कोटा, हरिद्वार, उदयपुर, अहमदाबाद आदि में सम्पन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा।

विशेष :

1- जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार-मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से संबन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।

2- अपने प्रियजनों की स्मृति में उनके नाम से।

3- सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा की निधि हेतु मुक्तहस्त से दान दें, रजिस्ट्रेशन कराने में अक्षम प्रतिभागियों को शुल्क में मदद् दें।

4- आयोजन में हमसे जुड़कर सहयोग करें, तथा अपने शहर में परीक्षा का केन्द्र बनवाएं। धन्यवाद,

सुमन कुमार वैदिक- मुख्य संयोजक
निवास- जे.380, बीटा-II,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) मो. 8368508395

डॉ० अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
मो. 9412139333

डॉ० अनिल रायपुरिया- संयोजक
नि. कोट बाजार, अमरोहा
मोबा. : 9837442777

वर चाहिए

वैदिक विचारों की संस्कारित ब्राह्मण कन्या। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चोटीपुरा से। शिक्षा- बी0टैक0। हिन्दुस्तान एरोनैटिक्स, बंगलूरू में प्रबन्धक युवती हेतु आर्य समाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए।
सम्पर्क सूत्र : 8368508395, 9456274350

दिल्ली निवासी सुश्री शैली, तलाकशुदा, कद 5'2'' रंग गोरा, जन्म 27/10/1983 एम0ए0बी0एड0, एम0सी0डी0 दिल्ली में असिस्टेंट टीचर, पूर्णतः शाकाहारी, पिता सरकारी सेवा से रिटायर्ड, एक भाई हेतु सुयोग्य व्यवसायी/ सेवारत वर की आवश्यकता है। कोई जाति-बन्धन नहीं। दहेज रहित विवाह। सम्पर्क करें- 9899252879, 9873133647

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्म- 12 मई 1992, कद- 5 फुट 6 इंच, शिक्षा- बी.टेक, हिन्दुस्तान ऐरोनोटिक्स में मैनेजर युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए।
सम्पर्क- 8368508395, 9456274350

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु- 40 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- स्नातक, व्यवसायी युवक हेतु आर्य परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 09457274984

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु-28 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- एम.बी.ए., प्रोफेसर, व्यापार में संलग्न युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 9456804666

धनौरा का प्रतिष्ठित आर्य अग्रवाल वैश्य परिवार, संस्कारित, आयु-35 वर्ष (तलाकशुदा), कद- 5 फुट 10 इंच, शिक्षा- एम.ए., पीएच.डी. हिन्दी, स्ववित्तपोषित महाविद्यालय में प्रवक्ता हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 8923285659

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● **पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प**

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभावों को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

सत्यार्थ प्रकाश

का एक और नवीन संस्करण प्रकाशित

साइज़ - 18 x 23 x 8

मूल्य- अजिल्द- 60

सजिल्द- 70

दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर **दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ**

आर्यावर्त केसरी
१-१५ नवम्बर २०१८

हिन्दी के सशक्त हस्ताक्षर थे डॉ. रामस्वरूप आर्य

हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. आर्य की स्मृति में हुआ भव्य ग्रन्थ का विमोचन

डॉ. बीना रुस्तगी
बिजनौर (उ.प्र.)।

केन्द्रीय मंत्री संतोष गंगवार व चन्द्र प्रकाश आर्य डॉ. रामस्वरूप स्मृति ग्रन्थ का विमोचन व डॉ. बीना रुस्तगी का सम्मान करते हुए- केसरी

हिन्दी लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार, समीक्षक व समालोचक डॉ. रामस्वरूप आर्य का स्मृति- सम्मान समारोह वर्धमान मंडप बिजनौर में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

समारोह में डॉ. रामस्वरूप आर्य के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रित तथा डॉ. चन्द्रप्रकाश द्वारा सम्पादित 'डॉ. रामस्वरूप आर्य स्मृति ग्रन्थ' का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि डॉ. चन्द्रप्रकाश ने हिन्दी जगत के सशक्त हस्ताक्षर व कीर्तिस्तम्भ अपने पिता डॉ. रामस्वरूप आर्य की पावन स्मृति में जिस स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन किया है, निश्चय ही यह उन जैसी दिव्य विभूति के लिए एक विनम्र श्रद्धांजलि होगी। आपका यह प्रयास न केवल स्तुत्य है, वरन् पितृऋण से उऋण होने का एक सारस्वत प्रयास भी है। ईश्वर आप पर सदैव अपना आशीर्वाद बनाए रहे। डॉ. आर्य के सम्पादन में प्रकाशित इस ग्रन्थ के विमोचन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे केन्द्रीय श्रम एवं रोजगार, राज्यमंत्री संतोष कुमार गंगवार ने अपने आत्मीय व भावनात्मक उद्बोधन में डॉ. आर्य के साहित्यिक अवदान की चर्चा करते हुए कहा कि उनकी छवि हिन्दी जगत की एक अपूर्णनीय क्षति है।

इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री श्री गंगवार राजनीतिक कम, एक शुद्ध साहित्य प्रेमी के रूप में अधिक नज़र आये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार हितेश कुमार शर्मा ने की। उन्होंने डॉ. आर्य का भावभीना स्मरण करते हुए कहा कि हिन्दी संसार उनके कृतित्व का सदैव ऋणी रहेगा।

श्री शर्मा ने आगे कहा कि मैंने 160 पुस्तकें लिखी हैं तथा मेरे जीवन में जो कुछ है वह डॉ. स्वरूप आर्य का ही है। डॉ. आर्य सच्चे अर्थों में एक पारसमणि पत्थर थे।

कार्यक्रम में एस.बी.डी. कॉलेज, धामपुर की पूर्व प्राचार्या डॉ. सरोज मार्कण्डेय ने कहा कि उनका प्रभापुंज का तेज एक शिक्षक का था। जब-जब हिन्दी की बात होगी तब-तब डॉ. आर्य हमेशा याद किए जाएंगे। वे व्यक्तित्व के बजाय ज्ञान को प्रदर्शित करने वाले थे। उन्होंने कभी अपने आपको प्रकट नहीं किया। वह श्रमशील साहित्यकार थे।

समारोह में लखनऊ से पधारे डॉ. आर्य के परममित्र कौशल गोस्वामी ने कहा कि सरल व सहृदय व्यक्तित्व के धनी डॉ. आर्य हिन्दी जगत का चमकता हुआ सितारा थे, उन्होंने आर्य प्रकाश से न जाने कितनों का मार्गदर्शन किया।

स्मृति ग्रन्थ के विमोचन के समारोह में चांदपुर की विधायक डॉ. कमलेश सैनी ने डॉ. आर्य को एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में नमन् किया।

कार्यक्रम में वर्धमान कॉलेज की पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष व डॉ. आर्य की शोधार्थी डॉ. उषा जैन ने कहा कि डॉ. आर्य उद्भट विद्वान व समालोचक थे। उनके व्यक्तित्व को उजागर करने की सामर्थ्य शब्दों में नहीं है। उन्होंने कहा कि डॉ. आर्य को चलता-फिरता शब्दकोश की संज्ञा से विभूषित किया जा सकता है।

इस अवसर पर जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कॉलेज, अमरोहा की हिन्दी विभाग की एसोशिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष डॉ. बीना रुस्तगी ने कहा कि डॉ. आर्य विनम्रता व सादगी की प्रतिमूर्ति थे। उनकी वाणी का स्पर्श पाकर कठिन से कठिन विषय भी सुगम हो जाता था।

उनका भावभीना स्मरण करते हुए डॉ. रुस्तगी ने कहा कि यह एहसास उनके चिन्तन अनुचिन्तन के निबंधों को पढ़कर हो जाता है। उन्होंने कहा कि डॉ. आर्य द्वारा प्रेषित पुस्तक 'चिन्तन-अनुचिन्तन', उसके भीतर रखा डॉ. साहब की लेखनी से लिखा पत्र, जो आज मेरे लिए एक धरोहर के समान है, मुझे प्राप्त हुआ, जिसमें उन्होंने 'इनमैं लिख्यो है कहा' के लिए लिखा है कि "आपके द्वारा सम्पादित डॉ. शम्भूशरण शुक्ल के पत्रों का संग्रह उनकी स्मृति दिलाता रहता है। पीलीभीत के लोक साहित्य, लोक जीवन तथा संस्कृति के संरक्षण हेतु उन्होंने अपना जीवन ही समर्पित कर दिया।

इस अवसर पर डॉ. आर्य की पुत्री संतोष ने कविता पाठ से डॉ. आर्य का स्मरण किया।

समारोह में गणेश मणि त्रिपाठी, डॉ. वी.के. कौशिक, डॉ. जी.आर. गुप्ता, डॉ. इन्द्रदेव भारती, डॉ. किशन लाल वार्ष्णेय, वी.पी. गुप्ता, डॉ. कमल अग्रवाल इत्यादि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर भारी संख्या में शिष्ट-विशिष्ट जनों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

अन्त में डॉ. चन्द्रपाल आर्य ने अपनी माता श्रीमती हितेश कुमारी व भाई रवि आर्य व बहिन संतोष आर्या के साथ बाहर से पधारे सभी अतिथियों को शॉल ओढ़ाकर व प्रतीक चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया। डॉ. चन्द्र प्रकाश आर्य ने भी अपने वट वृक्षीय व्यक्तित्व वाले पिता जी का स्मरण करते हुए सभी आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन संजीव एकल ने किया।

सादगी व सरलता की प्रतिमूर्ति डॉ. रामस्वरूप आर्य

उदय : 1933 ● अवसान : 03.10.2017

डॉ. रामस्वरूप आर्य का नाम हिन्दी जगत में किसी परिचय का मोहताज नहीं हैं। उत्तर प्रदेश के जनपद बरेली में जन्मे डॉ. आर्य प्रारम्भ से ही मेधावी छात्र रहे। वे धर्मपरायण माँ देवकी देवी और लोक व्यवहार में निष्णात पिता लाला बांके लाल जी की संस्कारित संतान थे। एम.ए. हिन्दी, संस्कृत पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त करने वाले डॉ. आर्य ने दो दर्जन से अधिक सम्मान प्राप्त किये हैं। डॉ. आर्य साहित्य रत्न साहित्य महोपाध्याय, ज्ञान सागर व सरस्वती श्री के सम्मान से नवाज़े गये। डॉ. आर्य ने प्रवक्ता के रूप में पहले बरेली कॉलेज, बरेली और बाद में वर्धमान कॉलेज, बिजनौर में हिन्दी के विभागाध्यक्ष पद को सुशोभित किया। सरल व्यक्तित्व के धनी डॉ. आर्य अपने अध्यापकीय जीवन में अत्यन्त श्रद्धा के पात्र रहे। दर्जनों पुस्तकों के रचयिता दर्जनों शोधार्थियों के निर्देशक दर्जनों सम्पादित ग्रन्थ के सम्पादक डॉ. आर्य बहुआयामी व्यक्ति के धनी थे।

नि:संदेह डॉ. रामस्वरूप आर्य का निधन हिन्दी जगत के लिए अपूर्णनीय क्षति है। उनके शब्दाशीषों की छाया में हम सदैव ऊर्जावान बने रहेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

जाने कितने ही गए इस राह से, उनका पता क्या,
पर गये कुछ छोड़ इस पर, अपने पैरों की निशानी,
वो निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है।

साहित्य के संत, प्रेरणा प्रद व्यक्तित्व व चित्रकार डॉ. रामस्वरूप आर्य को समर्पित श्रद्धासुमन

मेरे पापा

मैं पापा की लाडली बेटी थी
घर में सब अपना प्यार दिखाते थे
पर कोई बिना दिखाए भी
इतना प्यार किए जा रहा था
वो थे मेरे पापा। -डॉ. संतोष

पूज्य पिताश्री : पावन स्मरण

पिताश्री थे स्नेह प्रेम की ऐसी भव्य मूर्ति।
जीवन में जिनकी कभी हो नहीं सकती पूर्ति।।
पितश्री का व्यक्तित्व था सदा इतना महान।
सादा जीवन उच्च विचार थी उनकी पहचान।।
रवि प्रकाश आर्य

पूज्य पिताजी : पुण्य स्मरण

वाग्देवी प्रसन्न हुई, अज्ञान का तम मिटा, भाँति-भाँति के भाव उमड़ पड़े मन में।
बासंती प्रभात में भीनि-भीनि बयार बही, भाँति-भाँति के पुष्प खिलने लगे भुवन में।
रिमझिम फुहारों बीच पुलक उठा तन सतरंगी रम्य दृश्य दीख पड़े गगन में।
सृष्टि के रचयिता यही वरदान दे दो, पिता की पावन स्मृति बसी रहे अंतर्मन में।
डॉ. चन्द्रप्रकाश आर्य

मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. आर्य

डॉ. रामस्वरूप आर्य हिन्दी और संस्कृत साहित्य के परम विद्वान होने के साथ ही, उर्दू काव्य में भी गहरी रुचि रखते थे। उर्दू के प्रसिद्ध कवियों की शायरी व गजलगोही का उन्होंने भली प्रकार अध्ययन किया था, जिसकी झलक उनके अनेक ललित निबन्धों में देखने को मिलती है। -वी.पी. गुप्ता

समर्पित शब्द-साधक डॉ. आर्य

डॉ. रामस्वरूप आर्य से लगभग चालीस वर्षों के अपने सारस्वत सम्बन्ध में मैंने यही पाया है कि डॉ. ने अपनी प्रतिभा और कर्मशीलता के बल पर 'समय के फिसलते रेत' पर अपने पाँव इतनी दृढ़ता से जमाए हैं कि आज वे हम सबके लिए प्रेरणा-स्रोत बन गए हैं। -डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'

डॉ. आर्य को जितना जाना और परखा

मैंने डॉ. आर्य जी के सहयोग से 'बिजनौर टाइम्स' के दो विशेषांकों का संपादन किया, इन दोनों विशेषांकों के संपादन में मुझे डॉ. आर्य जी की विद्वता, साहित्यिक पैठ तथा योगदान का परिचय मिला, आचार्य पद्म सिंह शर्मा विशेषांक के संपादन सहयोगी की भूमिका का निर्वाह करते हुए मुझे डॉ. आर्य जी का संपादकाचार्य डॉ. बनारसी दास चतुर्वेदी के सान्निध्य और आत्मीयता का भी प्रमाण मिला। श्रद्धेय डॉ. बनारसी दास चतुर्वेदी भी डॉ. आर्य जी का, उनकी योग्यता तथा विद्वता के लिये बहुत सम्मान करते थे।
-चन्द्रमणि रघुवंशी (वरिष्ठ पत्रकार)

सत्यार्थ प्रकाश ने किया नये युग का सूत्रपात

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा कालजयी ग्रन्थ है, जिसने सारे संसार को एक नयी रोशनी दी है, भ्रांतियों का निवारण किया है। रूढ़िवाद, पौंगापन्थ तथा असत्य और मिथ्यादि विषयों पर प्रहार करते हुए उनका उन्मूलन किया है। सत्यार्थ प्रकाश में सत्य का प्रबल आग्रह करते हुए असत्य और मिथ्या बातों के परित्याग का आहवान किया गया है। सत्यार्थ प्रकाश को विभिन्न विद्वानों, चिन्तकों तथा मनीषियों ने अपने–अपने ढंग से विवेचित व स्वीकार किया है।

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी विनायक वीर सावरकर ने कहा है ''कि सत्यार्थ प्रकाश की मौजूदगी में कोई भी विधर्मी अपने मत, पंथ अथवा मजहब की शेखी नहीं बघार सकता।''

इसी प्रकार वैदिक मिशनरी पं0 गुरुदत्त जिज्ञासु का कहना था कि ''यदि सत्यार्थ प्रकाश का मूल्य इतना अधिक होता कि मैं अपनी सारी संपत्ति बेचकर इसे खरीद पाता, तो भी मैं यह समझता कि मैं बहुत सस्ते में छूट गया।''

सत्यार्थ प्रकाश की महत्ता के विषय में महान नेता लाला लाजपतराय ने कहा था कि ''जब भी कोई उलझन आती है, तभी सत्यार्थ प्रकाश का पाठ करने से आसानी से सुलझा लेता हूं।

इसी प्रकार अमर शहीद पं0 रामप्रसाद बिस्मिल ने भी कहा है कि ''मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। इसके पढ़ने से मेरे जीवन का तख्ता पलट गया। मैंने देशभक्ति का पाठ सत्यार्थ प्रकाश से सीखा है।''

निश्चय ही यह एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसके मनन–चिन्तन और अध्ययन के पश्चात् किसी भी प्रकार की भ्रांन्ति शेष नहीं रहती तथा ज्ञान की एक नई रोशनी दिखाई देती है।

मुरादाबाद के राजा जयकिशन दास के आग्रह पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1874 ई0 में कालजयी ग्रंथ ''सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना कर वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात कर दिया। यह अनुपम ग्रंथ, जिसे ऋषि के स्वाध्याय के तीन हजार ग्रंथों का सार कहा जा सकता है, में 377 ग्रंथों का प्रमाण देकर 1542 वेदमंत्रों तथा श्लोकों का उद्धरण दिया गया है। इस ग्रंथ में केवल और केवल सत्य को ही प्रकाशित किया गया है। इस कारण यह मौलिक विचारों का ग्रंथ बन गया। सत्यार्थ प्रकाश चुने हुए क्रान्तिकारी विचारों का खजाना है। 'समाज की रचना जन्म के आधार पर न होकर कर्म के आधार पर होनी चाहिये'– सत्यार्थ प्रकाश का यही एक विचार इतना क्रान्तिकारी है कि इसके क्रिया में आने से हमारी 90 प्रतिशत समस्यायें हल हो जाती हैं। इस ग्रंथ में हर पहलू पर ध्यान दिया गया है। इसे चौदह समुल्लासों में वर्णित किया गया है। एक–एक समुल्लास के अध्ययन से हृदय में अतिशय आनन्द की अनुभूति होती है। सत्यार्थ प्रकाश के सृजन के समय उसकी भूमिका में महर्षि ने स्पष्ट कर दिया कि 'किसी नवीन मत मतान्तर चलाने का उनका लेशमात्र भी प्रयोजन नहीं है, वरन् आदि ऋषि ब्रह्मा से जैमिनी मुनि प्रयन्त जो मानते चले आए हैं उसे ही मैं मानता तथा स्वीकार करता हूँ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इस महान ग्रंथ के माध्यम से आप जीवन के हर प्रश्न का उत्तर जान सकते हैं। आप जान सकते हैं कि दुःखों का कारण क्या है? शान्ति कैसे प्राप्त हो सकती है? यज्ञ से मानव–कल्याण कैसे सम्भव है? गृहस्थ जीवन के कर्तव्य क्या होते हैं? सन्तान का व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण कैसे करें? हमारी शिक्षा पद्धति कैसी हो? राजनीति का सच्चा स्वरूप कैसा होना चाहिए? धर्म और विज्ञान एक–दूसरे के विरोधी हैं या सहयोगी? ईश्वर का स्वरूप और उसकी सच्ची पूजा, भक्ति क्या है? तथा हमारे जीवन में सुख, शान्ति तथा समाज में सहृदयता कैसे आ सकती है? आदि–आदि बिन्दुओं पर सत्यार्थ प्रकाश में पर्याप्त मंथन किया गया है। वास्तव में इस ग्रन्थ के पढ़ने से एक नई चेतना का उदय होता है। हमारी भ्रान्तियां मिटती हैं, व सत्य सनातन वैदिक धर्म का मार्ग प्रशस्त होता है।

आओ! आत्म तथा जनकल्याण के लिए इस क्रान्तिकारी ग्रन्थ का गहन अध्ययन करें। साथ ही इस ग्रन्थ के प्रचार–प्रसार के लिए पूर्ण मनोयोग तथा तन–मन–धन से उद्यत हों। इसके लिए हमें अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करना होगा ताकि महर्षि का यह अमर संदेश जन–जन तक पहुंच सके। इसी से मानव समाज, राष्ट्र तथा विश्व का कल्याण होगा।

कुछ आदर्श महापुरुषों के आदर्श वचन

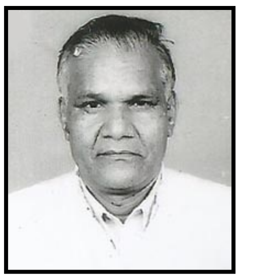

खुशहाल चन्द्र आर्य

भारत के गौरवशाली इतिहास का जब हम अवलोकन करते हैं, तो हमें अनेक महापुरुष ऐसे मिलते हैं, जिनके जीवनचरित्र बहुत ऊंचे और आदर्श थे। उनके जीवन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। ये वचन इस प्रकार हैं–

१. श्रीराम :

जब श्रीराम, माता सीता को लंका से लाने के लिए समुद्र से इधर की तरफ वानरों की सेना तैयार कर रहे थे, उसी समय विभीषण ने अपने भाई रावण को सीताजी को देने के लिए समझाया। जब वह नहीं माना और उसको लंका से निकाल दिया, तब विभीषण श्रीराम की शरण में गया। श्रीराम ने विभीषण को देखते ही समझ लिया कि यह रावण का निकाला हुआ मेरे पास आया है। इससे हमें युद्ध जीतने में काफी मदद मिलेगी। यह समझ कर विभीषण को देखते ही श्रीराम ने कहा, ''आओ लंकेश!'' यह सुनकर लक्ष्मण को बड़ा आश्चर्य हुआ और कहा– ''भैया! आपने विभीषण को लंकेश कैसे कह दिया। अभी तक तो युद्ध भी शुरु नहीं हुआ है, और युद्ध शुरु होने के बाद हम जीतेंगे या हारेंगे, इस बात का भी नहीं पता। आपने बिना विचारे ही विभीषण को लंकेश कैसे कह दिया।'' इस प्रश्न के उत्तर में श्रीराम ने जो कहा, वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। श्रीराम ने कहा– ''लक्ष्मण! पहली बात तो यह है कि हम सत्य पर हैं। सत्य क सदैव विजय होती है। इसलिए हम जीतेंगे ही। यदि किसी करणवश म हार भी गये, तो अयोध्या का रज्य तो मेरे पास है ही, मैं विभीषण को अयोध्या का राज्य दे दूंगा। तब लंकेश नहीं, तो अयोध्येश तो अवश्य ही बना दूंगा। इसमें कौनसा फर्क पड़ता है। अयोध्या भी लंका से छोटार राज्य नहीं है।

२. हनुमान जी :

जब श्रीराम और लक्ष्मण माता सीता की खोज में साधु वेश में घूम रहे थे, तब किष्किंधा पर्वत पर सुग्रीव और हनुमान बैठे वार्तालाप कर रहे थे। जब सुग्रीव ने श्रीराम और लक्ष्मण को अपनी ओर साधु वेश में आते देखा, तो सुग्रीव को भ्रम हो गया कि ये दोनों भाई बालि के भेजे हुए गुप्तचर तो नहीं हैं?इसकी जानकारी के लिए सुग्रीव ने हनुमान जी को भेद जानने के लिए इन साधुवेशधारियों के पास भेजा। हनुमान जी ने नीचे उतर कर श्रीराम और लक्ष्मण से इतने सुन्दर ढंग से बात की, जिससे श्रीराम प्रभावित होकर लक्ष्मण से बोले कि ''हे लक्ष्मण! यह व्यक्ति जो हमसे इतनी देर से बात कर रहा है, इससे कहीं भी व्याकरण की अशुद्धि नहीं हुई है। मुझे यह व्यक्ति चारों वेदों का विद्वान जान पड़ता है। तभी इसने हमसे इतने सुन्दर ढंग से बात की है।''

यहां मैं समझाना चाहता हूं कि लोग हनुमान जी को बन्दर बताते हैं। उसका बन्दर जैसा चेहरा और पूंछ लगाते हैं। यह बात गलत है। उस समय जंगलों व पहाड़ों पर रहने वाली एक वानर जाति थी। वे भी मनुष्य होते थे और विद्वान भी होते थे। हनुमान जी, सुग्रीव, बालि, व अंगद सभी वानर जाति के थे। इसीलिए हनुमान जी को श्रीराम ने चारों वेदों का विद्वान बताया और व्यक्ति बोलकर संबोधित किया। यदि हनुमान जी बन्दर होते, तो उसको बन्दर बोलकर संबोधित करते। इसलिए हनुमान आदि पुरुषों को बन्दर बताना अनुचित है।

१. श्रीकृष्ण :

श्रीकृष्ण एक अति चतुर, वाक्पटु, व वेदों के विद्वान थे। वे हर समस्या का समाधान निकालना जानते थे। वे महाभारत युद्ध में पाण्डवों का पक्ष सही होने से उनकी तरफ से लड़ रहे थे। जब दुर्योधन किसी भी रूप में पाण्डवों को राज्य देना नहीं चाहता था, तब अन्त में श्रीकृष्ण दुर्योधन के पास जाते हैं और सिर्फ पांच गांव, पांचों पण्डवों के लिए मांगते हैं। तब दुर्योधन ने कहा– ''हे कृष्ण, आप तो पांच गांव देने की बात कह रहे हो, मैं तो बिना युद्ध किये एक सुई की नोंक के बराबर भी जमीन देने वाला नहीं।'' जब श्रीकृष्ण निराश होकर वहां से आ रहे थे, तब दुर्योधन ने कहा– ''हे कृष्ण! कम से कम भोजन करके तो जाओ।'' तब श्रीकृष्ण ने एक व्यावहारिक बात यह कही कि ''ऐ दुर्योधन! भोजन दो ही स्थितियों में किया जाता है। पहली स्थिति– जब अति भूख लगी हुई हो, और दूसरी स्थिति– जब खिलाने वाले का प्रेम हो। यहां दोनों ही स्थितियां नहीं हैं। न मुझे अति भूख लगी है और न आपका प्रेम है। इसलिए भोजन करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। यह कहकर श्रीकृष्ण ने महात्मा विदुर के घर जाकर भोजन किया।

४. शेर शिवा जी :

शेर शिवाजी बहुत ही बहादुर, साहसी, चतुर व चरित्रवान व्यक्ति थे। उनके जीवन की एक घटना है, जिससे उनके महान चरित्र का परिचय मिलता है। घटना इस प्रकार है कि उनके दो सैनिक अपने राज्य में वहीं घूम रहे थे। उनको रास्ते में एक मुस्लिम सुन्दर युवती मिल गयी। उन्होंने सोचा कि इस सुन्दर मुस्लिम युवती को तो अपने राजा शेर शिवा को भेंट देनी चाहिए, ताकि वे खुश होकर हमको काफी ईनाम देवें। इसी उद्देश्य से वे उस युवती को शेर शिवाजी के पास ले आये और उन्होंने कहा– राजन! हम आपके लिए एक बहुत अच्छा तौहफा लाये हैं। शिवाजी ने कहा– दिखाओ। क्या लाये हो? तब उन्होंने उस युवती को शिवाजी के सामने खड़ा कर दिया। युवती को देखकर शिवाजी की आंखें लाल हो गयीं और अपने सैनिकों से कहा कि तुमने अभी तक भी अपने राजा को नहीं पहचाना। और कहा कि यह मेरी बेटी है, और अपने पिताजी से मिलने आयी है। मेरा फर्ज है कि अपनी बेटी को अच्छी प्रकार कपड़े व जेबर से सजा–धजा कर उसको उसके पति के पास भेजूं। सो तुम अच्छे कपड़े और जेवर लाओ, और मैं इसको सुसज्जित करके इसके पति के पास भेजूंगा। और उन्होंने वैसा ही किया। यह था शेर शिवाजी का चरित्र, जिससे अब के विधायकों, सांसदों व मंत्रियों को शिक्षा लेनी चाहिए।

५. महाशय राजपाल :

मुसलमानों ने श्रीकृष्ण और महर्षि दयानन्द पर बड़े–बड़े अश्लील आरोप लगाये, तब महाशय राजपाल ने आर्य विद्वान पं0 चमूपति एम0ए0 से कहा कि आप मोहम्मद साहब की जीवनी पर ऐसी पुस्तक निकालो कि मुसलमानों को ज्ञात हो जावे कि मोहम्मद साहब का जीवन कैसा था?चमूपति जी ने कहा कि पुस्तक तो मैं ऐसी लिख दूंगा, परन्तु उसमें मेरा नाम नहीं लिखूंगा, कारण मुसलमान मुझे मार देंगे। तब महाशय जी ने कहा कि ठीक है, पुस्तक बिना लेखक के नाम की मैं छाप दूंगा। चाहे मुझे मृत्युदण्ड भी झेलना पड़े, परन्तु लेखक का नाम नहीं बताऊंगा।

तब चमूपति जी ने 'रंगीला रसूल' नाम की पुस्तक लिखी और उसमें अपना नाम नहीं लिखा। यह पुस्तक मुसलमानों ने पढ़ी तो उन्होंने राजपाल जी को कहा कि आप लेखक का नाम बतला दो, आपको कुछ नहीं कहेंगे। राजपाल जी ने साफ इंकार कर दिया कि मैं लेखक का नाम नहीं बताऊंगा। तब मुसलमानों ने राजपाल पर मुकदमा कर दिया। मुकदमे में राजपाल जी जीत गये, परन्तु जब वह कोर्ट से बाहर निकले तो एक धर्मान्ध मुसलमान ने उनको गोली मारकर स्वर्गलोक में पहुंचा दिया। उस शहीद को आज भी याद किया जाता है।

६. स्वामी देव दयानन्द :

स्वामी देव दयानन्द एक महान संत, त्यागी, तपस्वी, परोपकारी व बाल ब्रह्मचारी संन्यासी थे। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण परोपकार व कल्याण करने में ही बीता। उनका कोई बुरा भी करता तो वह उसका भला ही करते थे। एक दिन किसी व्यक्ति ने स्वामी जी को पान में जहर दे दिया। उसके जाने के बाद स्वामी जी को जहर का ज्ञान हुआ तो उन्होंने गंगा नदी पर जाकर न्यौली क्रिया से जहर निकाल दिया और अपने स्थान पर आ गये। एक मुस्लिम तहसीलदार स्वामी जी का भक्त था। उसको जब इस बात की जानकारी हुई तो उसने जहर देने वाले को पकड़ लिया और स्वामी जी के पास जाकर कहा कि इस व्यक्ति ने आपको जहर दिया है। आप कहो तो इसे जेल में डाल दूं। तब स्वामी जी ने कहा कि मैं तो लोगों को जेल से छुड़ाने के लिए आया हूं, जेल में डालने के लिए नहीं। यह सुनकर तहसीलदार अचम्भित रह गया। यह थी स्वामी जी की महानता। पाठकगण इस लेख को पढ़ें और ऐसा ही बनने का प्रयत्न करें। तभी मेरा परिश्रम सफल होगा।

द्वारा– गोविन्दराम आर्य एण्ड संस
180, महात्मा गांधी रोड (दोतल्ला),
कोलकाता–700007
मोबा. : 9830135794

व्याकरण के सूर्य जगदगुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती

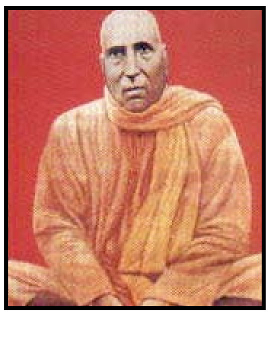

स्वामी स्वतंत्रानन्द

१४ सितम्बर पुण्यतिथि पर विशेष

(गतांक से आगे) उन्होंने मथुरा में शास्त्रार्थ की घोषणा करवा दी कि स्वामी विरजानन्द और कृष्ण शास्त्री का शास्त्रार्थ होगा। शास्त्रार्थ में यह प्रतिज्ञा रखी गयी कि 200 रु0 कृष्ण शास्त्री जी की ओर से तथा 200 रु0 विरजानन्द की ओर से एकत्र किया जावे। जो विजयी घोषित हो, वह यह धन प्राप्त करे।

शास्त्रार्थ की निश्चित तिथि आयी। जनता भी शास्त्रार्थ देखने के लिए बड़ी उत्सुक थी। स्वामी जी ने अपने उन्हीं शिष्यों को भेज दिया और कहा कि जब शास्त्री जी आ जावें, मुझे तत्काल सूचित कर देना। मैं शास्त्रार्थ के लिए पहुंच जाऊंगा। शास्त्रार्थ का समय हो गया, किंतु शास्त्री जी नहीं पहुंचे। अन्त में जनता में रोष एवं कौलाहल हो गया। इस अवसर को पाकर सेठ राधाकृष्ण ने शास्त्रार्थ महारथियों के शिष्यों का ही कुछ काल शास्त्रार्थ करवाकर कृष्ण शास्त्री की विजय की घोषणा करवा दी और वे 400 रु0 मथुरा के चौबों में बांट दिये। यह अन्याय देखकर स्वामी विरजानन्द जी के शिष्य सेठजी की मरम्मत करने को तैयार हो गये। उपस्थित जनता ने उनको यथा तथा शान्त कर दिया। सेठ जी को इसी से संतुष्टि न हुई। किंतु गुरुणां गुरु के पक्ष-पोषण के लिए काशी के पण्डितों से लिखित व्यवस्था मंगवा ली। और मथुरा में यह प्रसिद्ध कर दिया कि शास्त्री जी का ही मत सत्य है, ऐसा काशी के सभी पण्डित भी स्वीकार करते हैं। जब स्वामी जी को यह वृत्तांत विदित हुआ, तभी एक व्यक्ति को काशी भेजा। पंडितों से इस संबन्ध में उसने पूछताछ की। काशी के पंडितों ने पैसे के लोभ में धर्म को बेच दिया। उन्होंने कहा- यह हमारी व्यवस्था वास्तव में सत्य तो नहीं है, किंतु हम पहले ऐसी व्यवस्था दे चुके हैं। अब क्या करें, विवश हैं।

स्वामी विरजानन्द जी धर्मविक्रयी काशी के पण्डितों की ऐसी दशा देखकर बहुत व्याकुल हुए और सोचने लगे कि आज जब काशी के पंडितों की ही ऐसी दशा है, तो अन्य सामान्य जनों की क्या दशा होगी। आज देश में धर्म का सूर्य अस्त जो चुका है। लोग धर्म को दो कौड़ी में बेचने के लिए तैयार हैं। इस पतित भारत देश का किस प्रकार से सुधार हो सकता है। वे इस व्यथा से व्यथित रहते थे औरसंसार के कल्याण का मार्ग ढूंढा करते थे।

स्वामी जी के हृदय पर आर्ष ग्रन्थों का गहरा प्रभाव :

स्वामी विरजानन्द जी का एक दक्षिणत्य ब्राह्मण पड़ौसी था, जो अष्टाध्यायी का पाठ किया करता था। एक दिन वह ब्राह्मण पाठ कर रहा था। स्वामी जी ने उस पाठ को बड़े ध्यान से सुना। जब उन्हें 'अजाद्युक्ति' पद में अपने पक्ष को पुष्ट करने वाला प्रबल प्रमाण अष्टाध्यायी का सूत्र 'कर्तृकर्मणोः कृति' (2/3/35) मिला, तब स्वामी जी के हृदय में हर्ष का पारावार न रहा। उसी दिन से स्वामी जी के हृदय में कौमुदी आदि अनार्ष ग्रन्थों के प्रति प्रबल घृणा उत्पन्न हो गयी और तत्काल ही अपनी पाठशाला से अनार्ष ग्रन्थों का बहिष्कार कर दिया, और अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि आर्ष ग्रन्थों को पढ़ाने लगे। यह घटना आज से 118 वर्ष पूर्व की है।

सिद्धान्तकौमुदी आदि अनार्ष ग्रन्थों को पढ़ने में क्या भयंकर दोष हैं और अष्टाध्यायी आदि आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन में क्या दिव्य गुण हैं- यह एक प्रथम विवेचनीय विषय है।

स्वामी जी का यह स्वरचित पद्य उनकी आर्ष ग्रन्थों के प्रति गम्भीर श्रद्धा व्यक्त करता है-

अष्टाध्यायीमहाभाष्ये द्वे व्याकरणपुस्तके। अतोऽन्यत्पुस्तकं यत्तु तत्सर्व धूर्त्तचेष्टितम्।।

अर्थात् संसार में व्याकरण के दो ही सत्य ग्रंथ हैं, एक अष्टाध्यायी और दूसरा महाभाष्य। इनके अतिरिक्त और जो पुस्तकें हैं, वे सब धूर्तों की लीला मात्र हैं।

एतदनन्तर स्वामी जी छात्रों से दिन में दो घण्टों तक महाभाष्य का श्रवण करते और रात्रि में इसका मनन और स्मरण करके अगले दिन महाभाष्य को कंठस्थ सुनाते। इस प्रकार स्वामी जी ने सम्पूर्ण महाभाष्य कण्ठस्थ कर लिया। स्वामी जी फिर से एक आदर्श छात्र बन गये। आर्ष ग्रन्थों के प्रचार के लिए उनके हृदय में एक तीव्र भावना पैदा हो गयी। जब भी किसी पंडित से मिलते, इसी संबन्ध में वार्तालाप करते और चाहते कि यह भी यथा तथा आर्ष-ग्रन्थ अनुरागी हो जावे। जो भी मथुरा में प्रसिद्ध विद्वान आता, उसी से मिलते और आर्ष ग्रन्थों के प्रचार एवं प्रसार के लिए उन्हें प्रेरणा करते रहते थे। स्वामी विरजानन्द जी को आर्ष ग्रन्थों के प्रचार की ही एक धुन थी। आर्षज्ञान का यह सूर्य संयसार में फिर से चमकने लगा।

स्वतंत्रता संग्राम के सूत्रधार :

1914 विक्रमी तदनुसार 1857 ई0 में जो स्वतंत्रता-संग्राम लड़ा गया, उसके जन्मदाता महर्षि स्वामी विरजानन्द जी महाराज ही थे। क्योंकि जिन राजाओं ने उस स्वतंत्रता संग्राम यज्ञ में भाग लिया, वे सब स्वामी विरजानन्द जी महाराज के शिष्य थे। स्वामी विरजानन्द जी महाराज को इस पवित्र कार्य की प्रेरणा देने वाले उनके गुरु श्री स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती थे, जो उस समय अति वृद्ध हो चुके थे। स्वामी विरजानन्द जी ही 1858 के स्वतंत्रता संग्राम यज्ञ के सूत्रधार थे, इस सत्यता में संशय के लिए स्थान नहीं है।

अब प्रश्न उठता है कि जो लोग साधु एवं स्वामी हैं, उनको इस संसारी झंझट से जूझने की क्या आवश्यकता है?संसार की सुदशा हो या दुर्दशा, संसार सुखी हो या दुखी, साधु वृत्ति वाले लोगों का तो भगवान की भक्ति में ही लीन रहना एक मात्र कार्य है। अतः स्वामी विराजानन्द जी को क्या आवश्यकता पड़ी कि वे इन सांसारिक झंझटों में पड़े?

यह प्रश्न सामान्यतया ठीक-सा प्रतीत होता है। किंतु गहराई में पहुंचा जावे, तो इस प्रश्न में कोई तत्व नहीं।

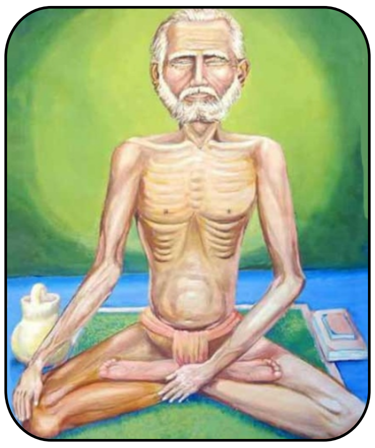

सच्चे साधु-संन्यासी जनों में 'आत्मवत् सर्वभुतेषु' की भावना अहर्निश कार्य करत रहती है। जो प्राणिमात्र के क्लेशों को अपना क्लेश एवं दुख समझता है, वास्तव में वही मानवपद से सम्बोध्य है। इस बात से कोई भी सहृदय व्यक्ति इंकार नहीं कर सकता। जब बात ऐसी है कि किसी प्राणी को दुख में देखकर सभी सहृदय प्राणियों का हृदय कांप उठता है, तो सोचिए जिसे सारे संसार के उद्धार की गम्भीर चिन्ता है, जिसे मानव मात्र से पुत्रवत् प्रेम है, जिसने सारे संसार को जगाने का बीड़ा उठाया है, और जिसका एकमात्र ध्येय सारे भूमण्डल में वैदिक धर्म को फैलाना है, वह किस प्रकार से अपनी जन्मभूमि भारतवर्ष को म्लेच्छों के हाथ में देख सकता है, और स्वतंत्रता संग्राम के लिए चुप्पी साध कर बैठ सकता है। यह कभी हो नहीं सकता। यह डंके की चोट से कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता संग्राम यज्ञ के जन्मदाता एवं सूत्रधार महर्षि स्वामी विरजानन्द जी महाराज ही थे।

सार्वभौम सभा की योजना :

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भारत को पराजय का मुख देखना पड़ा। 1916 वि0 तदनुसार 1859 ई0 के नवम्बर मास के अन्त से गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग ने देश में शान्ति की भावना स्थापित करने के लिए आगरा में एक अधिवेशन का आयोजन किया, जिसमें सभी राजे-महाराजे निर्मंत्रित थे। जयपुर के राजा रामसिंह भी वहां बुलाये गये थे। स्वामी विरजानन्द जी आगरा पहुंचे और राजा रामसिंह से मिले। स्वामी जी ने राजा रामसिंह से कहा कि स्वतंत्रता-संग्राम में तो हम पराजय का मुंह देख चुके हैं। मैं अब एक सार्वभौम सभा की स्थापना करना चाहता हूं, जिसके आप प्रधान हों। भारत के सभी प्रकाण्ड पंडितों तथा राजाओं को उसके लिए आमंत्रित किया जावे। मैं पंडितों तथा राजा लोगों को आर्षग्रन्थों का अपकर्ष समझाना चाहता हूं, जो इस संबन्ध में शास्त्रार्थ करना चाहें, मैं शास्त्रार्थ के लिए भी तैयार हूं। जब तक संसार में आर्षग्रन्थों का प्रचार नहीं होगा, तब तक भारत को अखण्ड स्वतंत्रता के दर्शन नहीं होंगे।

उस समय तो राजा रामसिंह ने यह स्वीकार कर लिया कि मैं इस कार्य के लिए पूरा-पूरा प्रयत्न करूंगा और जयपुर जाने पर आपको पूर्ण विश्वासात्मक उत्तर दूंगा। आगरा का अधिवेशन समाप्त हुआ। स्वामी विरजानन्द जी ने राजा रामसिंह को इस संबन्ध में एक पत्र लिखा। किंतु इस पत्र का कोई उत्तर स्वामी जी को न मिला। स्वामी जी की सब आशाएं निराशा में परिवर्तित हो गयीं। यदि राजा रामसिंह यह कार्य कर जाते तो आज संसार में अमर हो जाते। किंतु यह यश राजा रामसिंह के भाग्य में न था।

स्वामी जी ने अपने जीवनकाल में अनेक विद्वान छात्रों को पढ़ाया। अनेक प्रकाण्ड पंडितों से शास्त्रार्थ करके पण्डितों के मोघ पाण्डित्य के मद का मर्दन किया। स्वामी जी की कीर्तिचन्द्रिका सभी दिशाओं में फैल गयी। किंतु स्वामी विरजानन्द जी को इससे संतुष्टि न थी। उन्हें एक बड़ी भारी चिन्ता थी। वे सोचा करते थे कि यदि मेरी आर्षग्रंथ प्रचार की एवं भारत को स्वतंत्र बनाने की योजना मेरे साथ ही समाप्त हो गयी, तो संसार हित से वंचित रह जाएगा। वे शरीर से भी अत्यंत वृद्ध हो चुके थे। किंतु भगवान को ऐसा अभिप्रेत न था। कृपालु ईश ने स्वामी विरजानन्द जी के योजना-वृक्ष को फलीभूत करने के लिए तथा उनके निराश हृदय में आशा जल सींचने के लिए एक दिव्य विभूति को उनकी पाठशाला मे भेजा। उस दिव्य विभूति का नाम दयानन्द सरस्वती था, जिसे पाकर स्वामी विरजानन्द सरस्वती ने कहा था कि ''अंधेन यष्टिका लब्धा।'' अर्थात् अंधे को लाठी मिल गयी।

स्वामी दयानन्द जी का मथुरा में विद्याध्ययन :

सम्वत् 1917 वि0 तदनुसार 1860 ई0 में स्वामी दयानन्द विरजानन्द जी की मथुरा पाठशाला पहुंचे। स्वामी विरजानन्द जी महाराज से दयानन्द जी ने अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त आदि आर्ष ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया और ज्ञानपिपासा को पूर्णतः शान्त किया। एतत्संबन्धी विशेष घटनाओं का उल्लेख स्वामी दयानन्द के जीवनचरित से जाना जा सकता है।

स्वामी विरजानन्द जी महाराज ने स्वामी दयानन्द को अपने तुल्य विद्यासागर बनाया। आर्षग्रंथों का प्रचार एवं वैदिक धर्म का प्रसार, भारत स्वातंत्र्य योजना महत्वपूर्ण कार्यों का भार अपने कंधों से उतारकर स्वामी दयानन्द को सौंप दिया। अपने जीवन के अन्तिम काल में विरजानन्द जी ने योग्य शिष्य को प्राप्त करके सुख और शांति का अनुभव किया। इस प्रकार के आदर्श गुरु-शिष्य का प्रमाण इतिहास में खोजा नहीं मिलेगा।

देहावसान :

जीवनमुक्त गुरुवर स्वामी विरजानन्द जी महाराज सम्वत् 1925 वि0 आश्विन बदी त्रयोदशी, सोमवार, तदनुसार 1868 ई0 सितम्बर में अपने जीर्ण शरीर-वस्त्र को छोड़कर इस लोक से चल बसे। गुरु विरजानन्द जी के निर्वाण का वृत्तांत सुनकर स्वामी दयानन्द जी के मुखारविन्द से ये शब्द निकले- ''आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है।''

गुरुवर विरजानन्द जी का सम्पूर्ण जीवन आर्षग्रन्थों के प्रचार के लिए समर्पित था। अतः उनकी गणना उच्च कोटि के हुतात्मा महापुरुषों में की जाती है। अपनी कीर्तिप्रभा से स्वामी विरजानन्द जी संसार में सदा अमर रहेंगे।

**अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।**

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले
आर्यावर्त केसरी
में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है-
पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-
स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है।

-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : **8630822099**

मानव का तीसरा शत्रु है अभाव

'सरस्वती सुमन' के सम्पादक व 'क्रान्ति' जैसी अनेक पुस्तकों के लेखक, तथा छतारी के नवाब डॉ० कुंवर अखलाक के पुत्र वैदिक विद्वान डॉ० आनन्द सुमन सिंह ने मानव के चार प्रमुख शत्रु- अज्ञान, अन्याय, अभाव, तथा आलस्य बताये हैं। पिछले दो अंकों में क्रमशः अज्ञान व अन्याय के विषय में लेखक के विचार प्रकाशित हुए हैं। इस अंक में मानव के तृतीय शत्रु 'अभाव' पर लेखक के विचार प्रस्तुत हैं। -सम्पादक

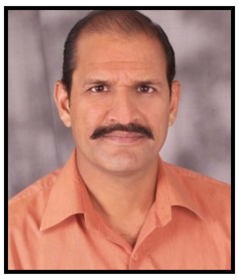

डॉ० आनन्द सुमन सिंह

तीसरा शत्रु अभाव- आज के अभाव के कारण सकल विश्व में त्राहि-त्राहि मची हुइ है। अभाव एक महान राक्षस बनकर विश्व के सम्मुख खड़ा है, जैपे विश्व को निगल जाने को तैयार हो, कहीं धन के अभाव में समाज के अनेकों प्रणी मरते हैं। कहीं-नन्हें बच्चों को दूध तक प्राप्त नहीं होता। कहीं अभाव के कारण हमारी माताऐं बहने मजबूरी में अपने शरीर का व्यापार करती है, तो कहीं अभाव के कारण चोरियाँ, डकेती व अपहरण होते हैं। कहीं अभाव के कारण बहुत से मानव अशिक्षित हैं। अपने ही राष्ट्र में अभाव के कारण अनेकों वनवासी व हरिजन कहलाने वाले बन्धु धर्मान्तरण के शिकार होते हैं अनेकों गरीब बन्धु अपनी घर की लक्ष्मी का व्यापार करती है, आप स्वयं अपनी आंखों से देख सेते हैं कि अनेकों सड़क के किनारे सोते हैं, अनेकों बच्चे भूख से बिलख-बिलख का अपने प्राण त्याग देते हैं। कहीं अभाव के कारण कोई निर्धन अपने साथी को पर्याप्त औषधियाँ देने में असमर्थ हैं। आज विश्व के अधिकांश मानव अभाव से प्रभावित हैं। क्योंकि अभाव का नाश करने वाला वैश्य वर्ग स्वार्थी बनकर सारा धन अपनी तिजोरियों में में सुरक्षित रखना चाहता है। काला बाजारी भ्रष्टाचार के माध्यम से अर्जित किया गया सारा धन मात्र वैश्व वर्ग अपने तक सुरक्षित रखता है। किन्तु इसके विपरीत वैदिक वर्ण व्यवस्था में वैश्य का कर्म है कि उचित रूप से अर्जित धन को ब्राह्मण क्षत्रिय व शुद्र में आवश्यकता अनुसार यथायोग्य वितरित कर दे किन्तु आज का वैश्य वर्ग स्वयं तो सर्व सुनिधा सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है औश्र अपने वास्तविक कर्म को त्याग देता है। तब अभाव का नाश कैसे सम्भव है। इस प्रकार नीचे वन क्या हम अभाव का विरोध करने में समर्थ हैं। वेद के पवित्र उपदेशानुसार हमारे वैश्य वर्ग का ही नहीं सकल मानव समाज का यह कर्म होना चाहिए कि यदि पड़ौसी भूखा है तबि प्रथम उसे भालन करायें तब स्वयं भोजन करें। आज हमारे वैश्य वग्र को दिग्भ्रमित नहीं होना चाहिये। सामाजिक अभावी को दूर करने का कार्य भी तो वैश्य वग्र को ही करना है, वैश्य वर्ग को भक्षक नहीं अपितु रक्षक बनना चाहिए।

भ्रष्टाचार, काला बाजारी, चोरी, डकैती से क्या हमारी अर्थव्यवस्था सुधर सकेगी, विदेशी ऋण से क्या हम अभाव को समाप्त कर सकते हैं इनमें से कोई भी नियम सर्व हितकारी नहीं लगता, नीचता की एक सीमा होती है। हम तो यहाँ तक नीचा बन गये हैं कि अनेकों प्रकार के कल्याण करने वाली गाय माता की चर्बी व मांस का घिनौना व्यापार भी करते हैं, व गाय माता की चर्बी को वनस्पति घी में मिलाक कर अनेकों अनजान व्यक्तियों को माँस भखण पथ पर पहुँचा देते हैं। यदि हम गाय माता को जीवित रखें तो हमारी अर्थ व्यवस्था में काफी सुधार हो सकता है। जैसे गाय माता के दूध से हमें बल, शकित व ज्ञान प्राप्त होगा, गाय माता के बछड़ों से हमें कृषि सम्बन्धी कार्यो में समुचित सहयोग मिलेगा, गाय माता के गोबर से खाद मिलेगा, गाय माता के मूत्र से नेत्र एवं अन्य रोगों में सहायता मिलेगी। किन्तु गाय माता को कत्ल कर उसके मांस व चर्बी से क्या समुचित लाभ होगा?आज विश्व के प्रत्येक मानव को व्यापार करने की अनुमति है। किन्तु प्राणि के कल्याण को दृष्टिगत रखते हुये हमें अपना कार्य करना होगा। यह नहीं हि हम अपने स्वार्थ के कल्याण दूसरे प्राणी को समाप्त कर दें। हमारे समाज का वैश्व वर्ग यदि निस्वार्थ भाव से व्यापार करके हमारे समाज पर आवश्यकतानुसार व्यय करता है, समुचित उद्योगों द्वारा कृषि व अन्य साधनों द्वारा उचित पुण्य रूपी धनार्जन करना है, तब सम्भव है कि हमारे समाज से अभाव रूपी शत्रु का नाश हो सके, परमेश्वर की पवित्र वेद वाणी द्वारा प्रदत्त वर्ण व्यवस्था के आधार पर हमारा वैश्य वर्ण ही समाज के अभाव रूपी शत्रु का नाश करने में समर्थ है। किन्तु ऋण लेकर अवैध रूप से अर्जित धन संसार से अभाव रूपी शत्रु का नाश करना कठिन ही है, हमें पुण्य की कमाई को ही संतोष से स्वीकारना चाहिये देखें वेदोपदेश

रमन्तां पुन्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अमीनशम् ॥ अ० ६-११५-०४

भाव-पुण्य की कमाई मेरे घर की शोभा बढ़ाये पाप की कमाई को मैं नष्ट करने में न हिचकिचाऊँ। देखे वैदिक ज्ञान से परिचित मानव क्या कल्पना करता है कि पुण्य की कमाई ही मुझे लगे पाप की कमाई मैं नष्ट कर दूँ। क्या आज हम पाप की कमाई को नष्ट करने में स्वयं को समर्थ समझते हैं। यदि नहीं तो क्यों?आज हमारे वैश्य वर्ग को इन सब उपदेशों को भी धारण कर लेना होगा। अवैध रूप से अर्लित धन बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है, विश्व के लिए हानिकारक है। जिस समाज मे पाप की कमाई का प्रयोग होता है, वह समाज कभी सुखी नहीं होता। परिणाम हमारे सम्मुख है आज सारा संसार दुखी है, आज संसार का मानव अवैध रूप से अर्जित धन का भोग करता है। वेदों में वर्णन है जैसा खाये अन्न वैसा बने मन। हमें अन्याय व अवैध रूप से अर्जित धन का भोग त्याग देना चाहिये चाहे एक समय ही भोजन करें, तब देखें कैसी आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है। (लेखक स्वयं अनुभव कर चुका है) लोभ लालच व मोह को त्याग कर हमें सादा व श्रेष्ठ जीवन जीना चाहिए। तभी तो हम स्वस्थ प्रसन्न जीवन का वास्तविक अनुभव कर सकते हैं। क्या किसी का धन छीन कर हम सुखी होंगे कदापित नहीं। हमें लालच नहीं करना चाहिए। वेदोपदेश देखें -

मागृधः कस्य स्विद्धनम् ॥ यजु. ४०-१

किसी के धन पर मत ललचाओ। स्वयं पुरुषार्थ कर कमाओं स्वयं पर भी व्यय करो समाज पर भी व्यय करो व निर्धन दीनहीनों की सहायता भी करो। क्या हमारा वैश्य वर्ग इन नियमों को जीवन में धारण करता है। कहीं हमारा वैश्य वर्ग अनुसचित रूप से धनार्जन कर तिजोरियाँ तो नहीं भरता, कहीं अन्न अभाव में दुगुने दामों पर अन्न वितरण तो नहीं करता, कहीं भ्रष्टाचार द्वारा कोई अधिकारी सुख सुविधाएं नहीं भोगता यह सब सोचकर चलना होगा हमारे कर्मो द्वारा ही तो हम मानव या दानव की श्रेणी में आते हैं। निर्णय हमे करना है, कि हम मानव हैं या दानव। यदि हम विश्व शान्ति चाहते हैं, यदि हम मानव को दानव के रूप में देखना चाहते हैं। तो हमें दूसरों के साथ वही व्यवहार करना होगा जो हम स्वयं के लिए दूसरों से चाहते हैं।

केवलाधो भवति केवनाधी॥ १०-११७-७

भाव-अकेला भोग भोगने वाला व्यक्ति पाप को ही भोगता है तब हमारे वैश्य वर्ग को निर्णय करना है कि वह सभी प्राणियों को समान अधिकार देना चाहते हैं या केवल स्वयं ही सुख सुविधाएं भोगना चाहते हैं। वैश्य वर्ग से मात्र इतना ही निवेदन व आग्रह है कि अभाव को समाप्त कर विश्व में सुख शान्ति का वदिक चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने में तीनों वर्णो को यथा शक्ति सहयोग दे, आशा है वैश्य वर्ग विचार करेंगे। **क्रमशः**

ब्र० कृष्णदत्त जी का साहित्य उपलब्ध है

पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि पूज्यपाद ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

सम्पर्क :- डॉ. अशोक कुमार आर्य (9412139333)
आर्यावर्त प्रकाशन/आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा-२४४२२१

हल्दीघाटी का युद्ध

भगवानदास आर्य

महाराणा प्रताप मानसिंह (अकबर) युद्ध 18 जून 1576 ई0 दिन सोमवार को स्थान खमनौर हल्दीघाटी में हुआ था। अलबदायूंनी ने लिखा है, अकबर नाम में- राणा कीका दर्रे से बढ़ा उसने हमारी शाही सेना पर चढ़ाई की और आगे बढ़ी हुई पंक्ति पर हमला बोल दिया, जससे हमारी शाही सेना की अग्रिम पंक्ति में भगदड़ मच गयी। वह 5-6 कोस अर्थात् 10-12 कि0मी0 दूर जाकर रुकी। महाराणा प्रताप ने प्रातः एक घड़ी (24 मिनट) दिन चढ़े ही हमला बोल दिया था। उस दिन दोपहर में भयंकर गर्मी पड़ी थी। अंगारे हवा में बरस रहे थे अर्थात् धूप आग उगल रही थी। मुगल साम्राज्य के विशेष सम्मान (उपाधि फरचन्द से सम्मानित राजा मानसिंह थे) मानसिंह (अकबर) ने 2 अप्रैल सन् 1576 ई0 को युद्ध को रवाना हुए। मानसिंह ने सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मांडलगढ़ में सेना का शिविर लगाया और जून सन् 1576 के आरम्भ में बनास नदी के किनारे नाथद्वारा के निकट मालेला पहुंचा। यह स्थान हल्दीघाटी के करीब 9 मील यानी 15 किमी0 दूर है।

मानसिंह इस तथ्य से पूर्ण वाकिफ था कि बहुत बड़ी फौल के बावजूद हल्दीघाटी के हालात में मेवाड़ की सेना से मुकाबला करना आसान नहीं था। युद्ध रणनीति बदलते हुए शाही बाग के मैदानी क्षेत्रों में मुगल सेना की एक टुकड़ी को भेजा तथा महाराणा की सेना को युद्ध का ललकारा। हमला पहले महाराणा की तरफ से हुआ। भागती हुई मुगल सेना का पीछा करते खमनौर के निकट बनास नदी के एक मैदान में जा डटी। जहां मुगल सेना के साथ कुछ घण्टों की मारकाट में रक्त की धारा से जमीन लाल हो गयी। इतिहासकार लिखते हैं कि मुगल सेना की तरह यदि महाराणा भी रिजर्व सेना की टुकड़ी रखते, तो निश्चित ही जीत होती। लेकिन इस युद्ध ने उनकी कीर्ति को अमर बना दिया। युद्ध इतना भयंकर था कि बनास नदी का पानी लाल हो गया। युद्ध में मानसिंह के भाई मोधोसिंह ने भी प्रताप से सामना होने पर भाले की मूठ से महाराणा के दो दांत तोड़ दिये। हल्दीघाटी युद्ध से 9 वर्ष पूर्व अकबर ने चित्तोड़ फतह की थी। तथा अकबर ने कत्ले आम किया था। यह युद्ध प्रताप से नहीं हुआ था, उनके पिता उदयसिंह से चित्तोड़ किला जीता था।

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य की स्मृति में स्मारिका-प्रकाशन

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य-जगत की एक प्रख्यात विभूति थे। वे जीवनपर्यन्त 'वानप्रस्थ साधक आश्रम' के विभिन्न प्रकल्पों के लिए समर्पित रहे। उनके विस्तृत कार्यों ने देश-विदेश को प्रभावित किया है। उनकी कार्यशैली, मार्गदर्शन, योजनाएं दीर्घावधि तक सहस्रों व्यक्तियों को प्रेरित करती रहेंगी। हम सभी व्यक्तियों की स्मृतियां उनके पावन संस्मरण से आप्लावित हैं। हमारी इच्छा है कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी से संबन्धित अविस्मरणयी प्रेरक संस्मरणों को स्मारिका के रूप में प्रकाशित किया जाए। इस संदर्भ में आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप अपने संस्मरण को लेखबद्ध करके और यदि उनका कोई विशेष चित्र हो, तो वह भी कृपया हमें यथाशीघ्र प्रेषित करें, ताकि वानप्रस्थ आश्रम की इस अभिलाषा में आपका पुनीत सहयोग प्राप्त हो सके। आप अपने लेख और विशेष चित्र को ई-मेल अथवा पत्र-व्यवहार के माध्यम से प्रेषित कर सकते हैं।

पत्र व्यवहार का पता :
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पत्रा0- सागपुर,
जिला- साबरकांठा (गुजरात)- 383307
E-mail id- vaanaprastharojad@gmail.com

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

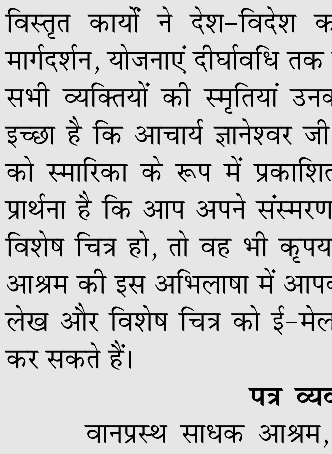

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक
दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह
इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनयः

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।
पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

ये कैसी विडम्बना

ओमवती देवी

मन द्रवित हो जाता है सोचने मात्र से। सोने की चिड़िया कहा जाने वाला मेरा भारतवर्ष आज भ्रष्टाचार की चक्की में दिन पर दिन पिसता चला जा रहा है। इस समस्या का कारण मेरे देशवासी ही हैं। जो दीमक की तरह युवाओं को अन्दर से खोखला करते चले जा रहे हैं।

क्यों देश की सरकार व्यवस्थापिका, उन महान देश के ठेकेदारों का ध्यान इधर नहीं होता, जिन्होंने देश के फलने-फूलने का जिम्मा लिया हुआ है। क्यों सांप के निकलने के बाद लकीर को पीटा जाता है।

मैं पूछना चाहूंगी उन बुद्धिजीवियों से तथा उन व्यवस्था बनाने वाले महान व्यक्तित्वों से, जो देश के निर्माण में लगे हुए हैं, कि मेरे देश में भ्रष्टाचार को क्यों फलने-फूलने दिया जा रहा है?भ्रष्टाचार, रिश्वत, बलात्कार, दोहरी मानसिकता जैसी बुराइयों को जड़ से क्यों नहीं उखाड़ा जाता। जहां से उन्हें पनपने के तत्व मिल रहे हैं, उन्हें क्यों नहीं खत्म किया जाता।

वाह! कैसी विडम्बना है कि एक छात्र कठिन परिश्रम करके पढ़ता है। धन खर्च करता, समय नष्ट करता, सदाचारों का पालन करता, उत्तम चरित्र का निर्माण करता है, क्योंकि उसे सदाचार की शिक्षा दी गयी। नैतिकता का पालन करता तथा वह कुछ बनकर देश को सुधारना चाहता है, देश की सेवा करना चाहता है। परन्तु जैसे ही वह विद्यालय का परिसर छोड़कर समाज की उस सीढ़ी पर कदम रखता है, जहां उसकी मंजिल उसका बेशब्री से इंतजार कर रही है, तो सीढ़ी पर चढ़ने से पहले ही समाज की बुराइयां उसके रास्ते में पहाड़ बनकर खड़ी हो जाती हैं।

एक छात्र कठिन परिश्रम करके दिन-रात एक करता है कि उसे आमुक परीक्षा में पास होना है। अच्छे नम्बरों से, मगर पेपर भी देता अनेक कठिनाइयों का सामना करके पता चलता है कि अमुक पेपर लीक हो गया। परीक्षा रद्द। अब फिर का क्या पता।

प्रतिभा एक कोने में पड़ी सिसकियां भरती रह जाता है तथा भ्रष्टाचार रूपी कायरता निश्वतखोरी उच्च पद पर आसीन हो सूट-बूट में खिलखिलाती है। इस बाबत तरक्की देश की गयी भाड़ में। इस छात्र की क्या गलती थी। यही कि कठिन परिश्रम से पढ़ा सदाचार अपनाया, नैतिकता अपनाई, अनुशासन में रहकर पढ़ाई की।

आज देश के नौजवानों में कुण्ठा है। वे नर्वस हैं। बेचैन दिमाग, असन्तुलन में है। एक तो मंजिल न पाने का दुख, समाज के ताने, बेरोजगारी, रिजल्ट। परिणाम होता है आत्महत्या, दुर्घटना, अमानवता, अय बुराइयां।

क्यों रक्षा करने वाले भक्षक बन जाते हैं। किसी परीक्षा के लिए सरकार का तथा उन छात्रों का कितना धन खर्च होता है। इन्तजाम किये जाते हैं, चौकसी बरती जाती है, व्यवस्था बनाई जाती है। फिर क्यों पेपर लीक होते हैं। पिछले कुछ वर्षों से यह कितना सुनने को मिल रहा है कि पीसीएस का पेपर लीक हो गया, टीजीटी, पीजीटी का पेपर, कांस्टेबल भर्ती का पेपर लीक हो गया, शिक्षक भर्ती घोटाला, बीटीसी परीक्षा पेपर लीक हो गया। जब पेपर लीक होते हैं, तो व्यवस्था कहां चली जाती है। क्या सब शासन-प्रशासन आंख मूंदकर सो जाते हैं।

क्यों दोषी को ऐसा दण्ड नहीं दिया जाता, जिससे आगे फिर ऐसी घटना न घटे।

दोहरी मानसिकता कहूं या क्या नाम दूं, समझ नहीं आता। बाहर लिखा होता है बड़े स्पष्ट शब्दों में धूम्रपान करना निषेध है। मगर वहीं पर धूम्रपान होता है। लिखा होता है कि रिश्वत लेना अपराध है, रिश्वत भी वहीं ली जाती है। दहेज लेना-देना मना है, मगर लिया जाता है। भ्रूण लिंग की जांच करना दण्डनीय अपराध है, मगर नर-मादा की जांच होती है। कन्याहत्या मना है, पर कन्या की भ्रूण में हत्या कर दी जाती है। शराब पीना मना है, मगर इसी की सबसे ज्यादा बिक्री होती है।

इन सब बातों के लिए उत्तरदायी कौन है?अपराध करने वाला खुश है, क्योंकि कहीं न कहीं वह निर्भय है कि आमुक अपराध के लिए इतना पैसा खर्च होगा, बस फिर कुछ नहीं होगा।

उदाहरणार्थ- शबनम-सलीम केस (2008) में शबनम ने अपने ही परिवार के सात खून किये। मगर वह अपना बच्चा पाल रही या पल रहा है। इस घटना को लगभग 10 वर्ष हो चुके। शबनम भी है, सलीम भी। और उनकी वह नाजायज औलाद भी। सरकार उनकी देखरेख कर रही है, तो क्यों उन्हें दण्ड नहीं दिया गया। शबनम की इस घटना के बाद न जाने कितनी और शबनम बनी हैं। क्या अभी उसका दोष सिद्ध नहीं हुआ। मेरी राय में तो यदि उसे उसी समय कोई ऐसी सजा दी जाती बीच समाज में, ताकि सबकी रूह कांप उठती। जिससे कि फिर कोई लड़की ऐसा कदम उठाने से पहले सोचने के लिए मजबूर हो जाती।

बड़ा दुख हुआ, जब एक आठ साल के बच्चे के मुंह से ये शब्द सुने- ''सात हजार रुपये न सही साले, गोली मार दूंगा। और क्या कुछ दिन की जेल काटनी पड़ेगी, नहीं तो वो भी ना।'' ये शब्द वह बच्चा अपने मोहल्ले के लड़के से झगड़ते हुए कह रहा था, क्योंकि उसके पापा ने एक खून किया था एक साल पहले और नाम आने पर उसके पापा ने सात हजार रु० की घूस दी थी, और केस वहीं दब गया था।

अब दोषी किसे ठहरायें?यदि देश के हालात इसी तरह चलते रहे, तो दुर्दिन आने में अधिक समय नहीं बचा है। जब बच्चों को ऐसा माहौल मिलेगा, तो क्या होगा इस देश का?आज देश में मानवता तार-तार हुई है, कुण्ठित है, बेबस और लाचार है। क्यों?क्योंकि वह मानवता है। मानवता होना उसका सबसे बड़ा गुनाह ही तो है।

युवा पीढ़ी में दोहरी मानसिकता है। एक लड़का किसी लड़की के साथ स्वच्छन्द घूमना चाहता है, उसका सर्वस्व पाना चाहता है, दोस्ती चाहता है। मगर शादी करना चाहता है, एक भोलीभाली व गुणवान लड़की से। क्योंकि उसे पत्नी सदाचारी चाहिए, जो पतिधर्म निभाती हो। क्या उसने कभी सोचा है कि जिस लड़की के साथ वह घूमता, फिरता है, वह भी तो किसी की पत्नी बनेगी। होता क्या है?पारिवारिक वैमनस्य, कलह, आत्महत्याएं। लिखने को तो बहुत कुछ है, मगर स्थान का अभाव होने के कारण मैं यह कहना चाहूंगी कि समाज से उन शासन-प्रशासन, समाज को सुधारने वाले ठेकेदारों से कि मिलकर इन बुराइयों का खात्मा करें, जो हमारे देश को जकड़े हुए हैं।

स्वास्थ्य जगत

तुलसी के गुण

डॉ० उर्मिला किशोर

'तुलसी' के गुणों को हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व जान लिया था, इसीलिए उन्होंने इसे धार्मिक संस्कारों से जोड़कर इसकी पूजा प्रारम्भ की। वही परम्परा आज तक चली आ रही है। तुलसी कल्याण स्वरूपा है। तुलसी से पर्यावरण शुद्ध होता है। समाज से रोम-विकार दूर करने के लिए तुलसी एक साधन है। तुलसी की जड़, तने, पत्तों और मंजरी से अनेक आयुर्वेदिक औषधियां बनायी जाती हैं। आयुर्वेद में यह अनेक रोगों की चिकित्सा में काम आती है।

तुलसी के पत्ते जल में डालकर स्नान करने से शरीर अनेक रोगों से बचा रहता है। त्वचा में कांति और शरीर में स्फूर्ति आती है। मीठी तुलसी से आप डैंगू जैसी बीमारी से भी बच सकते हैं। इसकी सुगन्ध से डैंगू के मच्छर दूर भागते हैं। मीठी तुलसी को वन-तुलसी या नियाजबो भी कहते हैं। इसकी पत्तियां अन्य तुलसी से काफी बड़ी और हरे रंग की होती हैं। इसके फूल संगन्धित और हरे बैंगनी रंग के होते हैं। दिल्ली में इसे 'रामा-तुलसी' भी कहते हैं। यह एंटीबायोटिक तथा एंटीवायरस होती है। इसकी 3-4 पत्तियां खाने से रक्तचाप भी नियंत्रित होता है।

मीठी तुलसी गठिया, पेशाब में चलन, हैवाटाइटिस पेट का अल्सर जैसी बीमारियों में राहत देती है। इससे थकान, तनाव, उल्टी, दस्त, अरुचि, हिचकी, सर्दी-जुकाम, पेट संबन्धी रोग और मधुमेह में लाभ होता है।

सर्दियों में इसके इस्तेमाल से सेहत में लाभ होता है। चिकनगुनिया में तुलसी लाभकारी होती है। रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में भी तुलसी के पत्ते बहुत लाभकारी होते हैं। तुलसी का सेवन करने से स्वास्थ्य में बहुत लाभ होता है।

हमारी महान विभूतियां

प्रखर राष्ट्रचेता

रानी लक्ष्मीबाई

1. वास्तविक नाम	:	मनु बाई
2. प्रसिद्ध नाम	:	लक्ष्मी बाई
3. उपाधि	:	झांसी की रानी
4. जन्म	:	16 नवम्बर सन् 1835
5. जन्म स्थान	:	बनारस
6. पति	:	महाराज गंगाधर राव
7. पिता	:	मोरोपंत बलवंतराव तांबे
8. माता	:	भागीरथी बाई
9. शिक्षा	:	1. घुड़सवारी 2. अस्त्र प्रशिक्षण 3. पारम्परिक शिक्षा
10. संस्था	:	पेशवा संघ
11. मनोवृत्ति	:	1. घुड़सवारी की शौकीन 2. प्रखर राष्ट्रवादी
12. राजनीतिक सहयोगी	:	राव साहिब, तांत्या टोपे, नाना साहब
13. राजनैतिक प्रवेश	:	गोद निषेध नीति से क्षुब्ध होकर सन् 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष।
14. उल्लेखनीय कार्य	:	1. भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की प्रमुख कर्णधार 2. ब्रिटिश सरकार को उखाड़ने के लिए झांसी में सन् 1857 में आन्दोलन का नेतृत्व
15. मृत्यु	:	सन् 1858 ई.।

हमारी गौशालाएं

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गऊ संवर्द्धन तथा संरक्षण के लिए सर्व प्रथम सन् 1879 में हरियाणा के रामपुरा, रेवाड़ी में गौशाला का स्थापना की। यह विश्व की पहली गौशाला है। हमारे यहां 'गावो विश्वस्य मातर:' कहते हुए गाय को सबकी माता की संज्ञा से विभूषित किया गया है। इस '**हमारी गौशालाएं**' स्तम्भ के अन्तर्गत आर्यावर्त केसरी द्वारा भारतवर्षीय गौशालाओं के विषय में परिचयात्मक सामग्री प्रकाशित की जा रही है। तदनुसार विज्ञजनों की ओर से सामग्री प्रकाशनार्थ आर्मंत्रित है। धन्यवाद, -सम्पादक

ब्रह्म तथा देवयज्ञ और
आर्य पर्वों पर केन्द्रित
एक श्रेष्ठ पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
(केवल 15/- में)
आर्यावर्त प्रकाशन,
अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
सम्पर्क- 9412139333

घर-घर तक पहुँचाएं कालजयी ग्रंथ
सत्यार्थ प्रकाश
: प्रकाशक :
आर्यावर्त प्रकाशन,
अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
मूल्य- ५०/-, १५०/- सम्पर्क- 9412139333

कन्या गुरुकुल नवलपुर (बिजनौर) उ०प्र०
आवश्यकता है
बिजनौर मीरापुर रोड पर गंगनहर के किनारे शान्त स्थान पर स्थित कन्या गुरुकुल नवलपुर में प्रवेश प्रारम्भ हैं। साथ ही अंग्रेजी पढ़ाने के लिए अध्यापिका की आवश्यकता है।
-प्रबन्धक/ प्रधानाचार्य, मोबा. : 8218138879

ऐसे होते हैं आर्य

ऋषिवर दयानन्द एवं वैदिक मिशन के प्रचारक

महावीर सिंह 'मुमुक्षु'

आपका जन्म 7 अप्रैल 1948 में ठाकुर मंगली सिंह एवं माता श्रीमती रामवती देवी के प्रतिष्ठित साधारण कृषक परिवार में हुआ। माता-पिता से घुट्टी में मिले संस्कारों के कारण अनचाही बुराइयों से बचते हुए 1971 से बिक्रीकर विभाग में सेवाकार्य किया। विभाग में आपकी कर्मठता, ईमानदारी और संगठन क्षमता सदा प्रेरणा का विषय बनी रहीं।

श्री मुमुक्षु जी 35-40 वर्षों से आर्य समाज, ऋषिवर दयानन्द के विश्व कल्याणकारी सिद्धांतों एवं मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में पूर्ण सहयोग और निष्काम भाव से तत्पर हैं।

आप आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी (मुरादाबाद) के अनेक वर्षों तक मंत्री और प्रधान रहे। अनेक समाजों को सक्रिय किया। सर्वसम्मति से जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद के मंत्री और प्रधान रहे। गरीब बच्चों को गुरुकुल में प्रवेश, वस्त्र, छात्रवृत्ति आदि के दान के लिए लोगों को प्रेरित करते रहे। आपकी देखरेख एवं अध्यक्षता में कृष्णकुमार अग्रवाल द्वारा मंगुपुरा, मुरादाबाद में स्थापित कृष्णा बाल विद्या मंदिर, दयानन्द सरस्वती शिशु मन्दिर, रेलवे हरथला कॉलोनी व ग्राम भदासना में रामधीन दयानन्द सरस्वती शिशु मन्दिर का संचालन हो रहा है।

वर्तमान में आप अपनी ऊर्जा से निरंतर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के उद्घोष को साकार करने में लगे हुए हैं। वैदिक धर्मप्रचार की दृष्टि से लघु पुस्तकों उद्बोधन, सदाचार सुधा, आध्यात्मिक साधना, गृहस्थ जीवन का मूलमंत्र, धर्म क्या है?आदि का लेखन किया। मीनाक्षीपुरम प्रकरण में आपके योगदान को देखते हुए आंध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने आपको सम्मानित किया। 2 नवम्बर 1993 में मुरादाबाद में सेवा संस्थाओं द्वारा आपका नागरिक अभिनन्दन किया गया।

प्रस्तुति : देवराज आर्य, ज्वालापुर

नियमित कॉलम — ऐसे होते हैं आर्य

सम्माननीय पाठकवृन्द!

हम आपके प्रिय व वैदिक संस्कृति के संवाहक आर्यावर्त केसरी में **'ऐसे होते हैं आर्य'** नाम से एक नियमित कॉलम प्रकाशित किया जा रहा है। अतः प्रबुद्ध आर्यजनों से निवेदन है कि ऐसे श्रेष्ठ महानुभावों, जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठायी है व समाज हित में अच्छे कार्य किये हैं, जिनसे कि आमजन प्रेरणा ले सकें, से सम्बन्धित जानकारी, उनके नाम व पते तथा एक रंगीन पासपोर्ट साइज़ फोटो सहित भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी,
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
मोबा. : 9412139333

कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की प्रेरणा से

मदरसा बना गुरुकुल

आर्यजगत से अपील है कि इस गुरुकुल को मुक्त हस्त से सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

सम्पर्क : आचार्य प्रणव मिश्र आर्य,
प्रबन्धक, वेद भारती संस्कारशाला गुरुकुल,
पुसगवां, जिला- बदायूं (उ.प्र.)
मोबा. : 7248245000

अवश्य पढ़ें

आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित विभिन्न संग्रहणीय व उत्कृष्ट पुस्तकें। कम से कम सौ पुस्तकें मंगाने पर विशेष छूट है।

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा द्वारा प्रमाणित १४ आर्यपर्वों से संबंधित एक विशेष पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
मूल्य : २० रुपये

महर्षि दयानन्द की विशेषताएं
मूल्य : ८ रुपये

आर्योद्देश्य- रत्नमाला
मूल्य : ८ रुपये

आर्य कन्या की सूझबूझ
मूल्य : ८ रुपये

आर्यसमाज की मान्यताएं
मूल्य : ८ रुपये

गौकरूणानिधिः
मूल्य : ५ रुपये

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

सम्पर्क करें :
डॉ. अशोक कुमार आर्य
आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा
(उ०प्र०)-244221
मोबा. : 09412139333

वैदिक कर्मकाण्ड, प्रवचन, आयुर्वेद सम्बन्धी परिचर्चाओं के लिए सम्पर्क करें

सुमन कुमार वैदिक
(वैदिक प्रवक्ता)
निवास- जे.-380, बीटा-।।,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
मोबा. : 8368508395,
9456274350

प्रेरक प्रसंग (क्रमशः)

रामकुमार 'धनुर्धर' वानप्रस्थ द्वारा सम्पादित नीति शतक से..

परोपकार पुण्य है, परपीड़न पाप

हम अपने आसपास ऐसे कई कथित धार्मिक लोगों को देखते हैं, जो दिन-रात भगवद्भजन करने की बातें कहते रहते हैं, लेकिन मौका देखते ही गलत तरीके से धन अर्जित करने और दूसरों को कष्ट पहुंचाने से पीछे नहीं हटते। धर्मशास्त्रों में बताया गया है कि अगर सच्चा धार्मिक बनना है, तो दूसरों की सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखना चाहिए और उनकी सहायता करनी चाहिए।

इसी से जुड़ा एक प्रसंग संत रामचंद्र डोंगरे जी महाराज का है। एक दिन उनके दर्शनार्थ अंग्रेजी के एक शिक्षक पहुंचे। वह बोले- महाराज, मैं संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण पुराणों और उपनिषदों का अध्ययन नहीं कर सकता। आप धर्मशास्त्र के महान ज्ञाता हैं। कृपया मुझे पुराणों और अन्य धर्मशास्त्रों का सार समझाने की कृपा करें।

डोंगरे जी महाराज ने कहा- आपको व्यास जी के इस श्लोक में समस्त पुराणों का सार मिल जाएगा- ''अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयं। परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।''

इसका अर्थ यह है कि अठारह पुराणों में दो बातें ही कही गयी हैं। पहली, परोपकार ही पुण्य है; और दूसरी, परपीड़न (यानी दूसरों को कष्ट देना) पाप है। डोंगरे जी ने उन्हें प्रेरणा देते हुए कहा- धर्म का सच्चा अर्थ ही सेवा और परोपकार जैसे सत्कार्यों में लीन रहना और हिंसा, उत्पीड़न, शोषण आदि से बचे रहना है। प्रत्येक मानव इन दो बातों का पालन करके अपना जीवन सार्थक कर सकता है।

निरीह प्राणियों की हत्या अक्षम्य

हमारे धर्मशास्त्रों में किसी भी निरपराध की हत्या को हमेशा वर्जित माना गया है। कहा गया है कि निरीह जीवों की हत्या करने वाला कभी भी सभ्य समाज का हिस्सा नहीं बन सकता। इसी संदर्भ में एक प्रसंग एक राजा का है, जो एक दिन शिकार के लिए वन में गया। वहां उसने विचरण करता एक हिरण देखा। राजा ने हिरण को निशाना लगाकर तीर छोड़ा। हिरण तीर से घायल होते ही तपस्यारत मुनि के चरणों में गिर पड़ा। राजा वहां पहुंचा, तो तेजस्वी मुनि के चरणों में खून से लथपथ हिरण को देखकर भय से कांप उठा। उसे पता था कि ऋषि-मुनि निरीह प्राणी की हत्या से क्षुब्ध होकर श्रेप दे देते हैं। भय के कारण उसके हाथ से धनुष-बाण छूट गया। हाथ जोड़कर बोला- मुनिश्री, मैंने शिकार के व्यसन के चक्कर में आपके आश्रम में हिरण की हत्या कर दी। मेरे अपराध को क्षमा करें।

ऋषि ने शांत भाव से कहा- राजन, हिरण मेरे आश्रम का हो या किसी अन्य का, वह आपके राज्य का ही तो जीव है। राजा का धर्म है कि अपने राज्य के प्रत्येक अहिंसक प्राणी को अभय प्रदान करे। आपने निरीह मृग की हत्या कर घोर पाप किया है। भविष्य में दूसरे को हानि न पहुंचाने वाले किसी निरपराध जीव की हत्या न करने का संकल्प लो। यह प्रायश्चित्त रूपी संकल्प ही तुम्हें इस पाप से उबार सकता है।

राजा ने उसी समय निरीह प्राणियों की हत्या न करने का संकल्प ले लिया।

मानव और पशु-पक्षी में अन्तर

हमारे नीतिशास्त्रों में कई ऐसे प्रसंग हैं, जिनमें मानव को संयमित जीवन जीने की सलाह दी गयी है। उनमें सीख दी जाती है कि कैसे संयमित जीवन उच्च विचार का पोषक होता है। एक संत अपने शिष्य के साथ वन में घूम रहे थे। उन्होंने देखा कि सामने से कुलाचें भरता हिरण आया और गायब हो गया। कुछ ही क्षणों के बाद खरगोश का जोड़ा मस्ती के साथ दौड़ता नजर आया। इसी बीच एक व्यक्ति हाथ में लाठी लिए हुए उधर से निकला। उससे बड़ी मुश्किल से चला जा रहा था। झुर्रियों से भरा उसका पीला चेहरा देखकर शिष्य दुखित हो उठा। उसने संत जी से पूछा- महाराज, हिरण, खरगोश तथा अन्य पशु-पक्षी कभी बीमार होते नहीं देखे। जबकि मनुष्य प्रायः किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त देखे जाते हैं। इसका मुख्य कारण क्या है?

संत जी ने शिष्य को समझाया- वत्स, पशु-पक्षी प्रकृति के अनुसार चलते हैं। खरगोश, हिरण आदि भूख लगने पर स्वाद की चिंता किये बिना हरी-हरी घास खाकर पेट भर लेते हैं। दोड़-दौड़कर खाया-पिया पचा लेते हैं। इसलिए कभी बीमार नहीं होते। जबकि मानव ने 'जीने के लिए खाने' की जगह 'तरह-तरह के सुस्वादु और चटपटे पदार्थ खाने के लिए जीना' अपना लक्ष्य बना लिया है। जिह्वा और अन्य इन्द्रियों पर नियंत्रण न रख पाना ही मनुष्य की शारीरिक और मानसिक विकृति का मुख्य कारण बना हुआ है।

शिष्य की जिज्ञासाओं का समाधान हो गया था।

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
'नीति शतक' (दो भागों में)
इसमें है सौ-सौ प्रेरक कथानकों का समावेश

स्वयं पढ़ें और बच्चों को भी पढ़ाएं

जियो भयमुक्त जीवन

मनीषा विमल

महर्षि दयानन्द सरस्वती मानव मनोविज्ञान के बहुत अच्छे ज्ञाता व गम्भीर चिन्तक थे। उन्होंने मनुष्य के मन व स्वभाव को बहुत गम्भीरता सेजाना व समझा। इसीलिए यज्ञ व संध्या में जो मंत्र लिये गये हैं, वे ऐसे मंत्र हैं, जो मानव व्यक्तित्व का विकास कर सकें। अथर्ववेद के दो मंत्र जो मानव की मूल प्रवृत्ति 'भय' के निदान के लिए 'शान्तिकरणम्' में रखे गये हैं, यदि उन पर ममन किया जाए, तो पायेंगे कि ईश्वर में विश्वास रखने वाले को किसी का भय नहीं हो सकता।

ओं अभयं न: करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावा पृथिवी उमे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।। (अथर्ववेद 19/15/5)

भावार्थ- हे ईश्वर अन्तरिक्ष लोक हमारे लिए निर्भयता देने वाला हो। द्युलोक एवं पृथिवी लोक निर्भयता प्रदान करें। हमें आगे से, पीछे से, ऊपर से, नीचे से भय न हो। हम अभय रहें।

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो य:। अभयंनक्तभयं दिवा न: सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।। (अथर्ववेद 19/5/6)

भावार्थ- हे जगत्पथे हमें मित्र से भय न हो। जाने-अनजाने पदार्थों से भय रहित हों। सब दिशाएं हमारे लिए मित्र सदृश्य हों।

अब प्रश्न उठता है कि यह 'भय' क्या है? जिससे मनुष्य इतना आतंकित रहता है कि परमात्मा से इतने सारे भयों की निवृत्ति की प्रार्थना कर रहा है। उत्तर है- भय एक मूल प्रवृत्ति है, जो मनुष्य के जन्म से ही साथ रहती है। जैसे हंसना, रोना, भूख लगना, शौचनिवृत्ति आदि। इन्हें हम मूल प्रवृत्ति कहते हैं, जो आत्मा के साथ जन्मजन्मांतर तक रहती है। भय का संवेग है- डरना, जिससे शरीर के अन्दर एक रासायनिक परिवर्तन होता है। जब मनुष्य भयभीत होता है, तो उसके हाथ-पैर ठण्डे पड़ जाते हैं। श्वास-प्रश्वास की गति पढ़ जाती है। दिल की धड़कन बढ़ जाती है, मस्तिष्क विचारशून्य हो जाता है। मुख से आवाज नहीं निकलती है।

इस प्रकार भय की प्रक्रिया सारे शरीर को प्रभावित करती है। भय की इस मूल प्रवृत्ति के कारण थोड़ा सा समझदार होने पर अकारण भय से ग्रसित हो जाता है। अकारण भय का तात्पर्य है इच्छानुसार कार्य का न होना। मनुष्य का संशयशील होना।

भय ही दुख का मूल भी होता है, जैसे- कभी किसी व्यक्ति की वाहन दुर्घटना में मृत्यु होते देख ली, किसी जानवर के काटने पर मृत्यु या अत्यंत कष्ट हाते देख लिया तो मनुष्य उस पशु या वहन से हमेशा के लिए भयभीत हो जाते हैं। बहुत सी बार इन अकारण भयों से जीवन में हानि उठाते हैं। और अपनी प्रगति की राह में स्वयं ही बाधक बन जाते हैं। अकारण ही अनेक भय हमें ग्रसित किये रहते हैं। जैसे चोरी का भय, यश खोने, कुत्ता बन्दर सांप आदि के काटने का भय, दुर्घटना का भय, परीक्षा का, नौकरी ने मिलने, व्यापार न चलने आदि नाना प्रकार के अकारण भयों से परेशान रहते हैं। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि इस तरह के 5000 से अधिक अकारण भय हैं, तो मनुष्य के जीवन को अस्त-व्यस्त किये रहते हैं। इनका प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य व सौंदर्य पर बुरा ही पड़ता है। उन्हीं अकारण भयों के कारण चिन्ता, सन्देह, कायरता, अविश्वास, असहनशीलता, ईर्ष्या आदि का जन्म होता है और अपनी कार्यकुशलता को खो देता है। भयभीत मनुष्य की इच्छाएं कुण्ठित तथा महत्वाकांक्षाएं चूर्ण हो जाती हैं। यहां तक कि मनुष्य का मानसिक सन्तुलन भी बिगड़ जाता है और वह अनेक रोगों को शिकार हो जाता है। आत्मविश्वास पाने का, अभय होने का सबसे अच्छा उपाय यज्ञ व योग, संध्या, प्रार्थना है। जब यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि जो होना है, वह तो होकर ही रहेगा। ईश्वर की बनाई इस सृष्टि में हमारा कुछ भी वश नहीं है। हमें तो ईश्वर ने बुद्धि दी है। हर परिस्थिति का सामना करने के लिए, ईश्वर की कृपा भी हमें तभी प्राप्त होगी, जब स्वयं पुरुषार्थ करेंगे, ओर विश्वास रखेंगे कि "सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।" सब दिशाएं मेरी मित्र हैं। केवल यह कहने से कि 'ईश्वर हमें अभय कर दो।" हमें अभय मिलने वाला नहीं।

भय अविष्कार की जननी भी है। रोग के भय से आयुर्वेद का जन्म हुआ। चिकित्सा के क्षेत्र में बड़ी-बड़ी खोज हुई। रोग निवारण के उपाय खोजे गये। शत्रुभय से एटमबम की खोज की और अन्य हथियारों की भी। मृत्युभय से योग विद्या का जन्म हुआ। स्वभाव में भय के स्थान पर अभय होकर रहना जीवन को उन्नत करता है, क्योंकि स्वभाव में कायरता व डरपोक होना, आलसी व अकर्मण्य होना एक अवगुण है, किंतु सावधानी तथा सतर्कता एक गुण है। यह भय का कारण नहीं।

-२/२५, आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर, हरिद्वार
मोबा० : ९७६०६१८१६२

सुमनकुमार वैदिक

आज बहुत से लोगों ने यह समझ रखा है कि इन्द्रियरागी होकर जीवन व्यतीत करना ही हमारे जीवन का उद्देश्यहै। बहुत से लोग खाने, पीने और उसकी सुगन्ध सूंघने में अपने आप को कृतज्ञ मानते हैं। बहुत-से घूमने-फिरने, अभिलक्षित चीजों को देखने में ही आनन्द मानते हैं। बहुत से लोग बिस्तर में पड़े रहने से ही आराम मानते हैं। बहुत से संगीत श्रवण और सीरियल, यूट्यूब और व्हाट्सअप के लट्टू बने रहते हैं। बहुत से लोग मरते दम तक लूटमार, झूठ, छल परिवार के नाम पर करते हैं। क्या यह मनुष्य जीवन का उद्देश्य है? ऐसा जीवन जीने के लिए परमात्मा को मानव योनी बनाने की आवश्यकता नहीं थी। ऐसा व्यवहार तो पशु-पक्षी भी करते हैं। कुसंग को ही उद्देश्य मानने वाले जीवन के असली उद्देश्य को भी हाथ धो बैठते हैं। सारांश यह है कि विषयों में लिप्त होकर, इन्द्रियों का दास बनकर अपने जीवन को नष्ट करना मनुष्य का कर्म नहीं हो सकता। सुन्दर कार्य करना महान कर्म है, जिससे जीवन उज्ज्वल बनता है। जब मनुष्य जीवन में निरन्तर कुछ न कुछ अच्छा करता रहता है, तो एक समय यह भी आता है जब जवन के उद्देश्य की पूर्णता को प्राप्त कर ही लेता है। सांख्य दर्शन के द्रष्टा महर्षि कपिल कहते हैं-

"अथ त्रिविध दु:खात्मन्त निवृति रत्यन्त पुरुषार्थ:।"

(सांख्य दर्शन का प्रथम सूत्र)

अत्यन्त पुरुषार्थ से आध्यात्मिक, अधिभौतिक, आधिदैविक तापों से बचा लेना मनुष्य का मुख्य उद्देश्य है, जैसे मनुष्य सीढ़ियों पर चढ़ता-चढ़ता अन्तिम मंजिल तक पहुंच जाता है, इसी प्रकार आत्मा अनेक भोगयोनियों से गुजरकर मनुष्य योनि पाता है, जो भोग के साथ कर्मयोनि के साथ मोक्ष प्राप्त करने का द्वार है। परन्तु जिस प्रकार अंतिम मंजिल पर पहुंच कर मानव गलती कर नीचे गिर पड़ता है, ऐसा ही मानव जीवन पा कुकर्म उसे वापस भोग योनियों में पहुंचा देते हैं।

जीवन को कर्मशील बनाएं

समुद्र में पड़ा व्यक्ति यह चाहे कि समुद्र जनित दुखों से बच पाऊं, यह तभी सम्भव है, जब किसी नौका का आश्रय मिल जाए। इस संसार सागर की भंवर में फंसा व्यक्ति यदि परमात्मा रूपी नौका को ठीक से जानता नहीं और वह मान बैठा है कि जब उसे वाणी से जान नहीं सकते, आंखों से देख नहीं सकते, तो उसको पाने का प्रयत्न क्यों करें। जब मानव को पुस्तक का ज्ञान न हो, उससे पुस्तक कैसे प्राप्त कर सकते हैं। ठीक यही दशा नास्तिकों की है। उन्हें ज्ञान ही नहीं कि ईश्वर किसे कहते हैं और वे इसके अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगाते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं कि यदि उनकी आत्मा साक्षी भी दे कि सर्वशक्तिमान जगतपिता कोई है, किंतु स्वभाव के अनुकूल वितण्डा किये बिना नहीं रहते। अपने गुरु चार्वाक का आश्रय लेकर कहते हैं-

"अस्ति चेदीश्वर कर्ता प्रत्यक्षं च कथं न हि।।" अर्थात् ईश्वर कोई है तो प्रत्यक्ष क्यों नहीं होता?

ये यहीं नहीं रुकते। आगे कहते हैं-

"अंग नालिंगन दिजन्यं सुखमेव पुरुषार्थ।" अर्थात् स्त्रियों के आलिंगन से उत्पन्न सुख ही पुरुषार्थ है।"

परन्तु यहां शुभ कर्म करने का उद्देश्य परमात्मा के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं है। जो ऐसा सोचते हैं, वे तो मूर्ति के दर्शन और उसे भोग लगाकर संतुष्ट हो जाते हैं। मानव जो करता है, अपने लिये ही करता है। अपने मानवत्व को ऊंचा बनाने के लिए परिश्रम करता है, न कि परमात्मा को पाने के लिए। इसलिए मानव को कर्म अवश्य करना चाहिए, जिससे उसका जीवन ऊंचा बन सके।

मनुष्य के जीवन में लाखों वर्षों के पाप और और पुण्यों के संस्कार संचित रहते हैं, जिन्हें भोगने आते हैं। आज किसी मनुष्य के ऊपर जितने कष्ट और संकट हैं, वे संस्कारों के कारण आते हैं। ये सब अपने-अपने संस्कार और भोग हैं। आज राजा और प्रजा कहीं अतिवृष्टि से, कहीं अकाल से, तो कहीं प्रदूषण से चिंतित हैं। ऐसा क्यों?इसका संक्षेप में उत्तर यह है कि संसार में यह विनाशता प्रजा के भोग और कर्म से है। ये सबकी भावनाएं होती हैं। जब मनुष्य पग आगे बढ़ाता है, तो पाप उसके पग में भरा रहता है। तो वह कर्म उसे भोगना ही पड़ेगा।

जब तुम्हारे एक-एक पग में स्वार्थ है, तो क्यों न तुम्हारी स्थिति ऐसी होगी?सब अपने कर्तव्यों को छोड़ते जा रहे हैं। अधिकार की चाह में अपने कर्तव्य पर दृष्टि नहीं डालते। अपने अधिकार की मांग और उदर की पूर्ति के चक्कर में ऐश्वर्य में मानव अपने जीवन को शांत करता चला जा रहा है। अब संसार की ऐसी दशा हो, तो वह ऊंचा कैसे बनेगा। आज मानव की दूसरों के अपमान में बहुत रुचि है और जहां किसी के गुणों को देखने या ग्रहण करने का प्रश्न उठता हे, वहां रुचि समाप्त हो जाती है। यह सब अपने कर्तव्यों को त्यागने का परिणाम है।

सतोयुग के मानव कैसे थे?उनमें कैसा आर्यत्व और श्रेष्ठता थी?कैसी उस काल में वर्णव्यवस्था थी?इस पर हमें विचार करना चाहिए कि वह हमारी संस्कृति कैसी थी, जिसने ऋषि-मुनि पैदा किय, उन्हें ऊंचा बनाया। आज पुन: यदि उस संस्कृति को अपने जीवन में ले आते हैं, तो हमारा जीवन स्वर्गमय बन जाएगा। जिस काल में चार व्यक्ति एक स्थान पर बैठते, तो परमात्मा की राष्ट्र को ऊंचा बनाने की चर्चा करते थे। किसी की निन्दा नहीं करते थे। उनके हृदय में देवता बनने की आकांक्षाएं रहती थीं। देवता बनने के लिए देवताओं (माता, पिता, गुरु) की पूजा करते थे। जब हर समय यह विचार रहेगा, तो मानव क्यों ऊंचा नहीं बनेगा।

राजा भी विचार करते थे कि मेरी प्रजा किसी प्रकार दुखी न हो। यदि प्रजा दुखी हो गयी, तो कर्तव्य से विहीन हो जाएगी और अपने उदर की पूर्ति के लिए कोई न कोई पाप करेगी।

आज भी जिस गृह में पवित्र आत्माएं निवास करती हैं, वहां पति-पत्नी में प्रीति होती है, आत्मिक बल होता है, परमात्मा का चिंतन होता है, देवताओं की पूजा होती है। वह गृह आज भी स्वर्ग है।

आज हमें उस महानता पर पहुंचना है, जहां हमारे पूर्वज, ऋषि-मुनि पहुचे थे। उस संस्कृति को अपनाना है, जो देवता बना मोक्षद्वार पर ले जा सकती है। देवता वे, जो दूसरों की उन्नति देखकर प्रसन्न होते हैं, और दैत्य वे जो दूसरों की महानता को नष्ट करना चाहते हैं। उनका हृदय दुर्गन्धयुक्त रहता है। हमें सुगन्धयुक्त बनना है।

(लेख ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचन हैं)

जीवित माता-पिता गुरुजनों की सेवा ही श्राद्ध है

जिस-जिस कर्म व सेवा से विद्यमान माता, पिता व गुरु आदि पितर प्रसन्न होते हैं, उसी का नाम श्राद्ध तर्पण है। जैसे संतृप्त घोल में और अधिक चीनी नहीं मिल सकती, वैसे ही माता, पिता व गुरुजनों का आदर करें। अज्ञानवश लोग स्वर्गीय माता, पिता व गुरुजनों के लिए अन्य लोगों को भोजन वस्त्रादि प्रदान करते हैं, किंतु उसकी रसीद न मिलने के कारण पितरों तक नहीं पहुंचाते हैं। क्योंकि जीव अपने कर्म के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से आपुभोग प्राप्त करता है। कुछ लोग परिवारी जनों के देहान्त के बाद तेरहवीं संस्कार ना देकर धागा तोड़ते हुए नाता तोड़ लेते हैं, किंतु चल-अचल सम्पत्ति में अपने को उत्तराधिकारी बताकर धोखा देते हैं। जो माता-पिता के समकक्ष हैं, उन्हीं को पितर कहते हैं।

अत: सुपुत्र धार्मिक परोपकारी विद्वानों को ही भोजन, वस्त्रादि दान देकर वास्तविक पुण्यभागी बनें। क्योंकि जो माता पिता गुरुजनों का विनम्रता के साथ आदर-सत्कार करता है, उसी को आयु, विद्या, यश और बल की प्राप्ति होती है। शासन ने भी माता-पिता हेतु दस हजार मासिक भत्ता देने के लिए विधान में पुत्रों को आदेश दिया है।

श्रद्धानन्द योगाचार्य-
बजरिया कायमगंज, फर्रुखाबाद (उ०प्र०)

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा
मोबा. : 9412139333

इस तरह होंगे देशभर में विविध कार्यक्रम

२ से संगीतमय कार्यक्रम

2 से 6 दिसम्बर तक संगीतमय दिव्यज्ञान कार्यक्रम में भक्तिसंगीत आर्यसमाज हापुड़ में पं0 संजीव रूप द्वारा किया जाएगा।

यज्ञोपवीत संस्कार १ से

1 से 5 दिसम्बर तक त्रिलोकपुरी, नई दिल्ली में 1008 बहुजन यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक सत्संग किया जाएगा। (शशि शर्मा, संपर्क सूत्र- 7678578288)

वार्षिकोत्सव २४ से

24 से 30 दिसम्बर तक आर्यसमाज गंगापुर सिटी (राज0) का वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा, जिसमें आचार्या नन्दिता शास्त्री, कमलापति शास्त्री व शिवकुमार वक्ता होंगे।

उत्सव ५ से ९ तक

आर्ष गुरुकुल, नोएडा का वार्षिकोत्सव 5 से 9 दिसम्बर तक गुरुकुल परिसर में होगा।

स्थापना दिवस २६ से

स्त्री आर्य समाज वैदिक आश्रम, सिविल लाइंस अलीगढ़ का 49वां स्थापना दिवस समारोह 26 से 28 नवम्बर तक 21 कुंडीय यज्ञ के साथ होगा। आचार्य वीरेन्द्र के प्रवचन और भीष्म आर्य के भजनोपदेश होंगे।

वार्षिकोत्सव २८ से

आर्य समाज पलवल का वार्षिकोत्सव 28 दिसम्बर से 2 जनवरी तक हुड्डा चौक पलवल में होगा।

२२ से होगा आर्यसम्मेलन

आर्य समाज, बड़ा बाजार, कोलकाता का वार्षिकोत्सव 22 से 30 दिसम्बर तक आयोजित होगा।

वार्षिकोत्सव २६ से

आर्य समाज ए ब्लाक, कालका जी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 26 से 29 दिसम्बर तक होगा। यह सूचना रमेश गाड़ी प्रधान ने दी। (सम्पर्क सूत्र- 26226176)

१२ से होगा उत्सव

आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग एवं स्त्री आर्य समाज श्रीगंगानगर में उत्सव 12 से 16 दिसम्बर तक होगा, जिसमें सामवेद पारायण यज्ञ होगा। इसके ब्रह्मा चन्द्रदेव आचार्य, भजनोपदेशक रामनिवास आर्य, पानीपत होंगे। (सम्पर्क सूत्र- 7597894991)

वैदिक सत्संग २१ से

20 से 21 दिसम्बर तक वैदिक सत्संग शिविर भुज, कच्छ में स्वामी शान्तानन्द द्वारा, 22 दिसम्बर को काला डूगर, सफेद रण आदि कच्छ के प्रसिद्ध दार्शनिक स्थल का भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। (शिविर शुल्क 1000 रु0। भ्रमण मार्ग व्यय अतिरिक्त।)

२२ दिसम्बर को मकर संक्रान्ति

आचार्य दार्शनेय लोकेश के ब्रह्मत्व में 22 दिसम्बर को उनके निवास- सी-276, गामा प्रथम में सूर्य के उत्तरायण के अवसर पर मकर संक्रान्ति के अवसर पर यज्ञ आयोजित किया जा रहा है।

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द जी
ठा. विक्रम सिंह जी आर्य
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, डॉ. अनिल रायपुरिया, डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स: 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawartkesari@gmail.com

ओ३म्

HANDICRAFT

सुषमा कला केन्द्र

आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।

प्रो० सुषमा गोगलानी
मोबा. : 9582436134

प्रतिनिधि-
अशोक कुमार गोगलानी
मोबा. : 8587883198

सी–1/1904 G.H.-05, B-Tech Zone-4, चैरी काउण्टी, ग्रेटर नोएडा (वेस्ट)

कार्यालय- जिलाधिकारी, अमरोहा

संख्या- 1131/ जि0आ0अ0/ अपील/ 2018/ आबकारी/ अमरोहा/ दिनांक 01 नवम्बर, 2018

अपील

जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि अवैध स्थानों/ अड्डों से बिकने वाली अवैध मदिरा का सेवन न करें, क्योंकि अवैध स्थानों/ अड्डों से मिलने वाली मदिरा जहरीली हो सकती है तथा मिथाइल अल्कोहल भी हो सकता है, जो तीव्र विष है तथा इसके आंशिक सेवन से आंखों की रोशनी जाने के साथ व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है। अतः किसी भी दशा में अवैध स्थानों/ अड्डों से खरीद कर अवैध शराब का सेवन नहीं करें। यदि किसी को अवैध मदिरा की बिक्री की सूचना प्राप्त होती है, तो दूरभाष नं0- 9454465656, 9454466502, 9454466503 एवं 8318201046 पर सूचित करें। सूचना देने वाले व्यक्ति का नाम गोपनीय रखा जाएगा।

जिला आबकारी अधिकारी,
अमरोहा

जिलाधिकारी,
अमरोहा